

## शैलेश मटियानी की कहानियों में स्त्री संवेदना

डॉ. अनिल सिंह

व्यक्ति जीवन संघर्षों से तपकर ही निखरता है। एक बार जब वह समस्याओं से जूझना छोड़ देता है और समभाव से जीवन की दिशा में आगे बढ़ना आरंभ कर देता है तब व्यक्ति की जो सोच होती है, वह उसे किसी भी दिशा में सार्थकता की ओर ले जाती है। कोई भी साहित्यकार यदि सचमुच अपने साहित्य में व्यक्ति और समाज की धड़कनों को सम्मिलित करना चाहता है तो उसके लिए यह एक अनिवार्यता है। शैलेश मटियानी हिंदी के ऐसे कथाकारों में से एक रहे हैं जिन्होंने अपने प्रारंभिक जीवन से ही जो संघर्ष आरंभ किया, वह आजीवन चलता रहा। हदें कुछ भी नहीं थी, कहीं तक चले जाने का जुनून था। जीवन तो उन्होंने एक ही जिया पर उस एक जीवन में अनुभूतियों से उन्होंने न जाने कितने जीवन जी लिए और अपनी कलम से वह अमूल्य धरोहर विरासत के रूप में छोड़ दी।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उन्होंने उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में अबाध और अपरिमित लेखन किया। उनका साहित्य समाज के अलग-अलग वर्गों के यथार्थ को जिस संवेदनशीलता से प्रस्तुत करता है, वह बहुत महत्वपूर्ण है। उनकी कहानियों में मध्यमवर्ग, निम्न-मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग के जीवन के कड़वे सच अपने पूरे राग-रंग के साथ मौजूद हैं। उनका लेखन व्यापक दृष्टिकोण को लेकर आगे बढ़ता है, जिसके दायरे में संपूर्ण मानवीयता है जो खंडों में बंटी हुई नहीं है। उनकी सोच पूरे समाज को लेकर आगे बढ़ती है। आज साहित्य का मूल्यांकन विविध विमर्शों के आधार पर होने लगा है। शैलेश मटियानी जैसे साहित्यकारों का साहित्य इन विमर्शों के संकुचित दायरे में नहीं अँटता। वह अतिक्रमण करता है और संपूर्णता की ओर बढ़ता है। पर फिर भी वर्गीय चेतना की दृष्टि से यदि शैलेश मटियानी के साहित्य में स्त्री संवेदना के विभिन्न पक्षों की पड़ताल की जाए, तो कुछ अनुचित नहीं होगा।

शैलेश मटियानी ने अपने कथा साहित्य में व्यक्ति और समाज का अत्यंत सहज और यथार्थ चित्रण किया है। इसी तथ्य के अनुरूप उनकी कहानियों में स्त्री संवेदनाओं का चित्रण जिस ढंग से हुआ है, वह अत्यंत सहज और उत्कृष्ट है। शैलेश मटियानी ने कहानी लेखन लगभग 1950 के आसपास आरंभ कर दिया था। आगे चलकर उनके 'मेरी 33 कहानियाँ' (1961), 'दो दुखों का एक सुख' (1966), 'सुहागिनी तथा अन्य कहानियाँ' (1967), 'दूसरों के लिए' (1967), 'तीसरा सुख' (1972), 'पापमुक्ति तथा अन्य कहानियाँ' (1973), 'जंगल में मंगल' (1975), 'महाभोज' (1975), 'भेड़ें और गड़रिये' (1975) जैसे और भी कहानी-संग्रह प्रकाशित होते रहे। इन संग्रहों की कहानियों में समाज के

अपने ग्राहक बलभद्र ठाकुर के साथ रहते हुए सावित्री भी कुछ ऐसा ही सोचती है। तीन दिनों के मेले के प्रवास में वह बलभद्र ठाकुर को यह प्रकट कर देती है। पहले तो वह ज्यादा से ज्यादा पैसा ऐंठने के फेर में रहती है। फिर बलभद्र ठाकुर का मन वह समझ जाती है और पैसा ऐंठने में उसे भी ग्लानि होती है और अंततः वह कहती है ' अब पुरुषोत्तम वगैरा भी आने ही वाले होंगे। आते ही फिर गोश्त और बोतल की फरमाइश न करने लगें --- और कहीं तुम केले के पत्ते जैसा हाथ बटुए में डालकर रुपए पकड़ा मत देना और बंशीलाल को भी रुपए देने की कोई जरूरत नहीं है। सौ का नोट जो तुमने राशन-पानी के लिए दिया था, चालीस-पचास तो उसमें से ही बचे होंगे। आखिर खर्च करने का भी एक तरीका होता है। तुम तो सौ-सौ के नोट ऐसे निकाल देते हो जैसे हम लोगों का आगे-पीछे खाने वाला और कोई है ही नहीं। और हाँ, यह तो मैं तुमसे पूछना ही भूल गई। पहली वाली दीदी का मुन्ना आखिर कब तक ननिहाल में पड़ा रहेगा दूसरों के भरोसे? बेचारा मां की ममता को तरसता होगा वहाँ।... मेले से लौटते ही उसको घर वापस ले आना है। अब ये - ए - ए - बंदरों की तरह क्या देख रहे हो मेरे को? अब तक तो तुम चार-पाँच बच्चों के बाप बन चुके होते।' इस तरह यह कहानी शांत स्वर में स्त्री जीवन की एक अदम्य इच्छा को अभिव्यक्त करने वाली कहानी है।

एक कहानी लेखक के रूप में शैलेश मटियानी का विस्तार ऐसा है, जैसा कि कम ही हिंदी कहानीकारों ने प्राप्त किया है। सन 1950 से शुरू हुआ उनका लेखन अनवरत रूप से बीसवीं शताब्दी के अंत तक चलता रहा। उनका लेखन अपने युगीन संदर्भों को अपने भीतर समेटे हुए है। उनके लेखन में प्रसंग के अनुकूल सब कुछ देखने को मिलता है। सामाजिक संवेदनाओं के जितने भी रूप हो सकते हैं, वे सब उनकी कहानियों में उपस्थित हैं। उनका लेखन मानवीयता के प्रति आग्रही लेखन कहा जा सकता है। यही उनके लिए सबसे बड़ा मूल्य है, जो उनकी कहानियों में हर पंक्ति में झलकता और दिखाई देता है।

संदर्भ :

1. पाप मुक्ति तथा अन्य कहानियाँ, नाबालिग (कहानी), शैलेश मटियानी, सत्साहित्य प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ सं. 19, 2. वही, पृष्ठ सं. 19, 3. पाप मुक्ति तथा अन्य कहानियाँ, खरबूजा (कहानी), शैलेश मटियानी, सत्साहित्य प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ सं. 26-27, 4. वही, पृष्ठ सं. 30, 5. पाप मुक्ति तथा अन्य कहानियाँ, गोपुली गफूरन (कहानी), शैलेश मटियानी, सत्साहित्य प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ सं. 40, शैलेश मटियानी, 6. पाप मुक्ति तथा अन्य कहानियाँ, गृहस्थी (कहानी), शैलेश मटियानी, सत्साहित्य प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ सं. 38

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

सोनुभाऊ बसवन्त कॉलेज, शहापुर, ठाणे



'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal  
Vol.-VIII, Issue-II  
Peer Reviewed Journal

E-ISSN :  
2348-7143  
April-June  
2021

Impact Factor - 6.625

E-ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S  
**RESEARCH JOURNEY**

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL  
April- May-June 2021  
Vol.-VIII, Issue-II

**Chief Editor -**

Dr. Dhanraj T. Dhangar,  
Assist. Prof. (Marathi)  
MGV's Arts & Commerce College,  
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

**Executive Editors :**

Dr. Kamalakar Gaikwad (Guest Editor, English)  
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)  
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)  
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

*Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.*

*- Chief & Executive Editor*

**SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS**  
For Details Visit To : [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net)

\*Cover Photo (Source) : Internet-

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

Website - [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net)

Email - [researchjourney2014gmail.com](mailto:researchjourney2014gmail.com)

हिंदी विभाग		
26	पर्यावरण प्रभाव आकलन (ईआईए) अधिसूचना-2020 : एक समीक्षात्मक अध्ययन	114
27	निर्गुण संतो का परिवर्तित युग पर प्रभाव	डॉ. सुभाष दोंदे
28	संत साहित्य में विश्वबंधुत्व - ज्ञानेश्वरी के पसायदान के संदर्भ में	डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी
29	प्रेमचंद की ग्राम्य जीवन की कहानियाँ	डॉ. माधुरी जोशी
30	शैलेश मटियानी के उपन्यासों में चित्रित महानगरिय जीवन	डॉ. साधना भंडारी
31	गिलीगडू उपन्यास में चित्रित वृद्ध जीवन की त्रासदी	डॉ. हेमलता काटे
32	तुलनात्मक दृष्टी से निराला और मुक्तिबोध के काव्य में समानता	डॉ. विष्णु राठोड
33	हिन्दी कहानियों में उभरती आधुनिकता	डॉ. ओमप्रकाश झंवर
34	मुंबई तटीय सड़क परियोजना : एक असन्धारणीय परिवहन प्रणाली	नेमलता ठाकूर
35	उध्यानिको से बदलता आर्थिक जीवन : हनुमानगढ़	डॉ. सुभाष दोंदे
	डॉ. एस. एस. खींची, जगदीश कुम्हार	156
मराठी विभाग		
36	महाराष्ट्रातील वाघ्या-मुरळी उपासक	डॉ. शंकर मुंडे
37	अहिराणी लोक वाङ्मयातील उखाण्यांमधील भावसौंदर्य	डॉ. रंजनी लुंगसे
38	आदिवासी साहित्यनिर्मितीच्या प्रेरणा	प्रा. राजू शनवार
39	आदिवासी चरित्र आत्मचरित्र : एक आढावा	प्रा. संतोष हापगुंडे
40	म. जोतीराव फुले यांचा स्त्री-शिक्षणविषयक दृष्टीकोन	डॉ. अनमोल शेंडे
41	बहिणाबाई चौधरी म्हणजे ग्रामीण कवितेचा मानदंड	प्रा. गजानन जाधव
42	तेंडोली (बागलांची राई) वेंगुलेंचे चिं. त्र्यं. खानोलकर ऊर्फ आरती प्रभू -लेखन प्रेरणा	प्रा. डॉ. बाळकृष्ण लळीत
43	व. वा. बोधे यांचे ललित लेखन	निलिमा लोहोर
44	ग्रामीण कादंबरी एक परिप्रेक्ष्य -	डॉ. विजय केसकर
45	१९९० नंतरच्या मराठी कादंबरीतील परिवर्तन	डॉ. राजाराम सोनटक्के
46	१९९० ते २००५ या कालखंडातील मराठी ग्रामीण कादंबरी	डॉ. विभीषण देशमुख
47	ग्रामीण साहित्यात प्रवाह निर्माण होण्याची कारण परंपरा	डॉ. अरुण पाटील
48	'अवकाळी पावसा दरम्यानची गोष्ट' : कृषी समाज जीवनाचे यथार्थ चित्रण करणारी कादंबरी	प्रा. प्रशांत पाटील
49	वऱ्हाडी कवितेतून साकार झालेला वऱ्हाडी माणूस व त्याचे दुःख	प्रा. गजानन जाधव
50	मधुकर सहकारी साखर कारखाना लि. फैजपूर चा ग्रामीण विकासातील सहभाग ऐतिहासिक दृष्टीकोनातून अभ्यास (विशेष संदर्भ 1980-1991)	प्रा. किशोर पाटील
51	कोविड -१९ : भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील आर्थिक व सामाजिक परिणामांचे अध्ययन	डॉ. डी. एन. सोनवणे
52	कोविड-१९च्या काळात भारतीय रोजगार क्षेत्रासमोरील आव्हाने आणि उपाययोजना	डॉ. जयश्री सरोदे
53	महाराष्ट्रातील दुष्काळ : समस्या आणि उपाय	प्रा. देवानंद मंडवधरे
54	भारतातील सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेच्या कार्यप्रणालीचा अभ्यास	डॉ. मधुकर अनंतकवळस
55	कॉर्पोरेट सामाजिक जबाबदारी : प्रकल्प 'नन्ही कली' एक विश्लेषणात्मक अभ्यास	डॉ. करुणा कुशारे, माधुरी झाडे

## आदिवासी साहित्यनिर्मितीच्या प्रेरणा

प्रा. राजू शंकर शनवार

सोनुभाऊ बसवंत कला व वाणिज्य महाविद्यालय, शहापूर. जि.ठाणे.

[rajushanwar@gmail.com](mailto:rajushanwar@gmail.com)

8805241281/9271479231

“हिंदूस्थानावर ज्या-ज्या वेळी परकीय आक्रमणे झाली, त्या त्या वेळी येथील आदिवासी जमातींनी त्यांना अत्यंत प्रखरपणे विरोध केला. भारतात प्राचीन काळी आदिवासींची अनेक टोळीराज्ये अस्तित्वात होती. मथुरा परिसरात असलेल्या अर्जुनायन या जमातीच्या गणराज्यांचा त्यात अंतर्भाव होतो. दक्षिण आणि पश्चिम भारतात नाग, आंध्र, आंध्र याबरोबरच महानदीची उपनदी असलेल्या तेल नदीच्या खोऱ्यातील आदिवासींचीही स्वतंत्र राज्ये होती. महाराष्ट्रातील सातपुडा पर्वतराजीत भिल्लांची संस्थाने, जव्हारला महादेव कोळ्यांचे संस्थान आणि महाराष्ट्र गुजरात सीमेवर असलेले डांगचे संस्थान अशी राज्ये अव्वल इंग्रजी अमदानीपर्यंत अस्तित्वात होती.”<sup>१</sup> इस्लामच्या आक्रमणाविरुद्ध लढताना राणी दुर्गावतीपासून ते पुंजा भिल्लापर्यंत अनेक आदिवासी शूरवीरांनी आपल्या प्राणाचे बलिदानही दिले. ब्रिटिशांविरुद्ध लढताना आदिवासींनी शंभरपेक्षाही अधिक लहान-मोठे संघर्ष केले. या संघर्षांमध्ये अनेक आदिवासी वीर हुतात्मा झाले. गुजरात पासून नागालॅंडपर्यंत आणि ओरिसापासून अंदमानपर्यंत भारतातील सर्व आदिवासी जमातीतील वीरांनी या संघर्षात आपली आहुती दिलेली आहे. शूरवीर आदिवासींच्या रक्ताने लिहिलेल्या या इतिहासाची तेजस्वी पाने मात्र भारतीय इतिहास लिहिताना विसरली गेली.

आर्यांचे हिंदुस्थानात आगमन होण्यापूर्वी आदिवासी हे ह्या देशाचे मूळ निवासी होते. या भूमीचे आदिपुत्र होते. त्यांची मोठमोठी राज्ये होती. विविधतेने नटलेली संस्कृती होती. परंपरांना, रूढींना व रीतिरिवाजांना अनुसरून त्यांची जीवनपध्दती होती. धर्म आणि देवदेवता होत्या. स्वतःचे सामाजिक आणि सांस्कृतिक तत्त्वज्ञान होते. राज्यशास्त्र पध्दती होती. विकसित बोलीभाषाही होत्या आणि त्या बोलीभाषेतील लिपीबद्ध साहित्यही होते. एकूणच हे आदिम जीवन सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आणि राजकीयदृष्ट्या समृद्ध आणि पुढारलेले होते. “स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतरचा कालखंड हा परिवर्तनाचा कालखंड आहे. या काळात सामाजिक, राजकीय चळवळींनी नव्या विचारप्रणाली, नवी तत्त्वे समाजात रुजवली. शिक्षणाचा प्रसार झाला. एक नवी दृष्टी मिळाली. शिक्षण सामाजिक जागृती, नव्या विचारांचा परिचय, भारतीय राज्यघटनेने प्रस्थापित केलेली मूल्ये, सामाजिक चळवळी इत्यादी गोष्टींनी सामाजिक व सांस्कृतिक जीवनात परिवर्तन घडविले. तसेच कला व साहित्याच्या क्षेत्रातही घडून आले. या सर्वांच्या संस्कारांनी नवसुशिक्षित वर्ग समृद्ध झाला. ‘माझे जगणे, माझे अनुभवणे व भोगणे मी माझ्याच शब्दांत व्यक्त करणार’ या भावनेने तो लिहू लागला.”<sup>२</sup>

आदिवासींचे परंपरागत जीवन अत्यंत साधे सरळ आहे. त्यामध्ये ते समाधानीही आहेत. नैसर्गिक आनंदाने ते परिपूर्ण आहेत. आदिवासींच्या वाड्या, वस्त्या एकाच गटाने आणि जमातीने वसलेल्या आहेत. त्यांच्यामध्ये परस्पराविषयी सहकार्याची भावना असल्याचे दिसते. एकमेकांच्या सुखदुखामध्ये सहभागी होण्याची वृत्ती आदिवासींमध्ये आहे. समता, मानवता, न्याय, बंधूता घेऊन आलेल्या भारतीय संविधानाने आदिवासी भागात काही प्रमाणात शिक्षण पोहचले. या शिक्षणातून महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, कार्ल मार्क्स यांचे विचार आदिवासी तरुणांना भारावून टाकत होते. साठोत्तर वाड्मयीन कालखंडावर दलित, ग्रामीण, स्त्रीवादी, जनवादी, कामगार चळवळीचा प्रभाव पडला आहे. नवे वाड्मयीन चळवळी आदिवासी लेखकाला लिहिण्यासाठी पूरक ठरल्या आहेत. मानवी संवेदना जागृत करणाऱ्या साठोत्तर कालखंडात क्रांतीपर्वाने भारावलेला नवयुवक मराठी साहित्यामध्ये नव्या जाणिवेने, नव्या उद्देशाने आपल्या संस्कृतीला, भावविश्वाला शब्दांकीत करीत आहे. हजारो वर्षांचा वंचित, शोषित, उपेक्षित प्रवास मांडण्यासाठी सज्ज आहे. त्याने निर्माण केलेले, या व्यवस्थेला हादरे देणारे विद्रोही साहित्य म्हणजे आदिवासी साहित्य होय. ते कथा, कादंबरी, नाटक, कविता, चरित्र-आत्मचरित्र, ललित, लोकवाड्मयाचे लिखित संकलन इ. साहित्य प्रकारांमध्ये हे साहित्य निर्माण झाले.

आधुनिक काळात दळणवळणाची साधने वाढली. आदिम जीवन नागरी आणि ग्रामीण जीवनाशी समरस होऊ लागले. सुखावतीचे जे साहित्य आले ते लोककला आणि लोकवाड्मयाच्या संकलन आणि संशोधनात्मक पातळीवरचे होते. सरोजिनी बाबर, दुर्गा भागवत, कुसूम व वसंत नारगोलकर, शैलजा देवगावकर या साहित्यिक संशोधकांनी आदिवासी लोकवाड्मय संकलित केले. त्यामुळे आदिवासी जीवनाशी जवळून यांचा संबंध आला. आदिम जीवनाच्या व्यथावेदनांशी जवळून एकरूप होता आले. आदिवासी समाजजीवनाची शोषित कहाणी समोर आली. साठोत्तर मराठी वाड्मयामध्ये आदिवासी नवशिक्षित युवकांनी आपल्या जमातीचे दुःख, वेदना, सामाजिक, शैक्षणिक पातळीवरील उपेक्षा साहित्य रूपाने मांडण्यास प्रारंभ केला. आदिवासी जाणीवेने केलेल्या लेखनातून



Rs. 30.00

ISSN- 0566-2257

# UNIVERSITY NEWS

*A Weekly Journal of Higher Education*

**Association of Indian Universities**

Vol. 59 • No. 23 • June 07-13, 2021

**Shirish Chindhade and Sunita Wadikar**

Our Changing Universities and Colleges: Impact of National Assessment and Accreditation Council

**J John Sekar**

Content to Competency: A Paradigm Shift in English Language Curriculum

**Ankush L More**

The Skill Development in Higher Education in India: Recent Trends, Opportunities and Prospects

**Neerja Sood**

Academic Counselling Models of Pre-COVID and COVID-19 Periods: A Study on Attendance and Retention of Students

**Kumar Mangalam Birla**

Investing in Yourself is the Only Way to Succeed  
– **Convocation**

# The Skill Development in Higher Education in India: Recent Trends, Opportunities and Prospects

Ankush L More\*

India has the second-highest population of the working age (15-59 years) individuals in the world. The skill set of this population group plays a critical role in the growth of the country. In India, education plays a vital role to build skill-based society of the 21st Century. It is the quality of education that decides the quality of human resources of the country. The intent of the present article is to analysis and highlights the status of contemporary education with respect to skill development. It is renowned for its size, diversity and complexity, whether it is geographical, socio-economic, cultural, political or developmental. All these factors impact on every aspect of life including employment, labour force considerations, education and training. If nation is a system, education is the heart of it. Education empowers the nation. Education is an important input for the growth of the Nation. Properly planned educational can increase national gross products, cultural richness, build positive attitude towards technology, increase efficiency and effectiveness of the governance. Education opens new horizons for an individual, provides new hopes and develops new values. It strengthens competencies and develops commitment. So, every government is now committed to provide the facilities that are required for educating a child right from the beginning. As compared to western economies where there is a burden of an ageing population, India has a unique 20-25 years window of opportunity called the “demographic dividend” means India has a higher proportion of working age population.

## India’s Scenario on Skills Development

India has seen rapid growth in recent years, due to the growth in new-age industries. The demand for a new level of quality of service has increased with the increase in purchasing power. However, there is a large shortage of skilled manpower in the country. In the wake of the changing economic environment,

it is necessary to focus on the skill development of the young population of the country. India lags far behind in imparting skill training as compared to other countries. As compared to western economies where there is a burden of an ageing population, India has a unique 20-25 years window of opportunity called the “demographic dividend.” This “demographic dividend” means that as compared to other large developing and developed countries, India has a higher proportion of working age population about its entire population.

The rapid economic growth has increased the demand for skilled manpower that has highlighted the shortage of skilled manpower in the country. India is among the top countries in which employers are facing difficulty in filling up the jobs. The key reasons in finding a suitable candidate for available jobs in the country are lack of available applicants, shortage of hard skills and shortage of suitable employability, including soft skills.

## Recent Trends in Skill Development in Higher Education in India

Worldwide, the percentage of employers who are experiencing difficulties filling job vacancies continues to rise. If are talking about India than it is on 7<sup>th</sup> position in facing difficulty in filling jobs. For India, the difficulty to fill up the jobs is 58%, which is above the global standard of 38% in 2015. The World Economic Forum indicates that only a little bit % of the total Indian professionals are considered employable by the organized sector. The unorganized sector is not supported by any structured skill development and training system of acquiring or upgrading skills. The skill formation takes place through informal channels such as family occupations, on-the-job training under master craftsmen with no linkages to formal education training and certification.

The percentage of employers who are experiencing difficulties filling job vacancies in India continues to fluctuate from 2006 to 2015. When compared with 2014, the proportion decreases from 64% to 58%. Employers are having major difficulty

\* Associate Professor, Department of Economics, Sonubhau Baswant College, Near Govt. Godown, Savroli Road Shahapur, Thane-421601 (MS). E-mail: moreankush71@gmail.com

year, but it can be achieved by consistent persuasion. Using of state-of-the-art infrastructure allied with ICT and a developed curricula for industry-ready candidates seems to be the dream of the country and its people, but, the possibilities of such extent need to be channelized and it is make sure that everyone do get the opportunity to be a part of such system.

## References

1. Aring, M (2012). Report on Skill Gaps, Education for All Global Monitoring Report.
2. Becker, G, S (1964). Human Capital: A Theoretical and Empirical Analysis, with Special Reference to Education, Chicago: University of Chicago Press.
3. FICCI (2010). The Skill Development Landscape in India and Implementing Quality Skills Training, August, p. 4.
4. GOI (2011). Working Group Report on Secondary and Vocation Education (12<sup>th</sup> Five Year Plan), Ministry of HRD, New Delhi.
5. GOI (2013). 12<sup>th</sup> Five Year Plan 2012-2017, *Planning Commission*, Vol.3.
6. GOI (2014). Annual Report 2013-14. Ministry of Labour and Employment.

7. GOI (2014). India Budget 2013-14.
8. GOI (2015). Skill Development and Training, Planning Commission, [http://planning.commission.nic.in/plans/planer/five\\_yr/11th/11\\_v1/11v1\\_ch5.pdf](http://planning.commission.nic.in/plans/planer/five_yr/11th/11_v1/11v1_ch5.pdf), accessed 16, August.
9. International Labour Organization (2011). Labour Market Performance and the Challenges of Creating Employment in India, p.7.
10. Konwar and Chakraborty (2013). Higher Education Scenario of the North-Eastern India, *Paripex-Indian Journal of Research*, Vol.2 (3), pp 78-80.
11. Nandi, Rahul (2014). India's Position in the Global Community: With Respect to Higher Education Scenario *International Journal of Educational Planning and Administration*, Vol.4(1), pp. 37-48.
12. Schultz, T W (1961). Investment in Human Capital. *American Economic Review*, 51,1-17.
13. The Economic Times (2017). The Higher Education and Skill Development, 31, March.
14. The Times of India (2012). Government Sets Target to Skill 500 million People by 2022, 10, January.
15. [www.indiabudget.nic.in](http://www.indiabudget.nic.in): <http://www.indiabudget.nic.in/budget2013-2014>. □

---

(contd. from pg. 10)

Another example is of a college in Maharashtra where over a period of less than ten years the college planted one lakh trees and raised a whole forest in due course. Surely, if some of the trees were mango and tamarind variety, it could be permanent revenue for the institution.

Another college in a far flung tribal belt could admit only first generation learners with low previous performance at the entry level, but affectionately and diligently groomed them academically and with useful skills and has a record recruitment in government administrative workforce from these underprivileged, initially low performing intake! What can be a better example of distinctiveness than this?

Now, the question is: How to identify distinctiveness? Well, one needs to know one's institution thoroughly with its Vision, Mission, history, achievements, efforts put in, diligent documentation and a continuous SWOC. Additionally, the "perception" of the stakeholders about the institution (which NIRF also values) has to be understood. The best clues for identifying distinctiveness are scattered in the 7 Criteria of the Manual. Their SWOC analysis will help out. □

Distinctiveness strengthens and sustains the glamorous and glorious survival of the institution, giving it a matchless identity in a ruthlessly competitive ambience. It is said, nothing succeeds like success.

"Distinctiveness" is another name for sustained success!

It has been our effort to highlight some of the new ideas and practices that have entered our HEIs only after NAAC introduced them. This is a fundamentally useful quality initiative and contribution of NAAC to Indian higher education which needs to be acknowledged and appreciated.

## References

1. <https://www.education.gov.in>
2. [https://www.investopedia.com/terms/b/best\\_practices.asp](https://www.investopedia.com/terms/b/best_practices.asp)
3. <https://www.oxnardcollege.edu>
4. <https://www.uclahealth.org>
5. Institutional Accreditation – Manual for Affiliated/ Constituent Colleges (Effective from July 2017), National Assessment And Accreditation Council □



## सामाजिक प्रतिबद्धता और राजेश जोशी की कविता

डॉ. अनिल सिंह

किसी भी सर्जनात्मक कार्य के पीछे कुछ न कुछ प्रेरणाएँ कारण होती हैं। ये प्रेरणाएँ सृजन को सार्थकता देने का काम करती हैं और सृजनकर्ता की पहचान निर्मित करने का काम भी करती हैं। कविता एक ऐसा सृजन है जो अपने पीछे कई तरह के ध्येय समेटे रहता है। आधुनिक हिंदी कविता अपने आरंभ से ही समाजोन्मुखी कविता रही है। आधुनिक हिंदी साहित्य के आरंभ की प्रक्रिया में जो परिस्थितियाँ मूलभूत कारण के रूप में उपस्थित थी, उनके कारण साहित्य की यह प्राथमिक जिम्मेदारी सी हो गई थी कि सामाजिक प्रतिबद्धता को समझते हुए साहित्य की दिशाओं को विशुद्ध मनोरंजन से इतर लोकहित की ओर परिवर्तित किया जाए। इस तरह हिंदी कविता अपने आरंभ से अपने इस ध्येय को लेकर साथ चली है। बदलती परिस्थितियों में संवेदना और शैली बदलते रहे हैं परंतु सामाजिक प्रतिबद्धता के प्रति जो संकल्प था, वह कभी नहीं बदला।

आधुनिक काल का आरंभ भारतेंदु युग से माना जाता है। आधुनिक काल के अनुरूप साहित्य-चेतना का निर्माण कुछ पहले से होने लगा था, परंतु सही अर्थों में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी साहित्य को भाषा, संवेदना और शिल्प इन सभी स्तरों पर एक आकार देने का कार्य आरंभ किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र के इसी काम को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने आगे बढ़ाया। इस मुकाम तक आकर हिंदी कविता भाषा, संवेदना और शिल्प के सभी स्तरों पर अपने रूप को स्थिर कर सकी थी। सही अर्थों में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने कविता को विशुद्ध रूप से सामाजिक सरोकारों के लिए साधन-रूप माना और लगातार इस संकल्प के लिए कार्य भी करते रहे। उन्होंने अपने समय के बहुत सारे कवियों को इस दिशा में प्रेरित किया और इसी का परिणाम था कि हिंदी कविता समाज-सुधार और राष्ट्रीय आंदोलन के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक हथियार के रूप में प्रयोग में लाई जा सकी।

स्वतंत्रता मिलने तक यह क्रम अनवरत रूप से चलता रहा। कविता ने संवेदना रूपी जो संपत्ति एकत्रित की थी, वह निरंतर बढ़ती रही। इसके बाद स्वतंत्रता प्राप्ति का बिंदु एक ऐसा बिंदु था, जिसने संवेदना को बदलने में व्यापक भूमिका निभाई। समाज सुधार और राष्ट्रीय आंदोलन अब पुनर्निर्माण के रूप में बदल गए। यहाँ से कविता ने अपनी आगे की यात्रा आरंभ की। भाषा और शिल्प के स्तर पर पुराने रूप तो चलते ही रहे और भी नए-नए रूपों का विकास हुआ। स्वातंत्र्योत्तर संदर्भों में जिस तरह से कविता का विकास हुआ उसमें दो तरह के कवियों का महत्वपूर्ण योगदान था। पहली श्रेणी में ऐसे कवि थे जो स्वतंत्रता के पहले से ही सक्रिय थे और स्वतंत्रता के बाद भी वे अपने काव्य-कर्म को नए संदर्भों में आगे बढ़ाने का प्रयास करते दिखाई

नुकसान अगर किसी को पहुंचाया है तो वह हमारा पर्यावरण है, जो हमें जीवन भी देता है। यह कुछ ऐसा ही है कि हम जिस पेड़ की डाल पर बैठे हैं, उसी डाल को हम काटते जाएँ, तो अंततः नीचे हम ही गिरेंगे। विकास की यह दौड़, जिसकी सच्चाई कुछ ऐसी ही है और जैसे अफरा-तफरी में समझने को हम तैयार ही नहीं हैं। हिंदी में राजेश जोशी जैसे और कवियों ने भी पर्यावरण को लेकर गहरी चिंता व्यक्त की है। अपने परिवेश से गहरे तक जुड़े राजेश जोशी भी इन चिंताओं को खुद से अलग नहीं कर सके और यह उनकी संवेदना का भी महत्वपूर्ण हिस्सा बनी है -

‘यहाँ वृक्ष काटे जा रहे हैं लगातार ! / अकाल या महामारी में जिस तरह लोगबाग छोड़कर चले जाते हैं अपने घर-बार / छायाएँ छोड़कर जा रही हैं अपनी जगह !’<sup>9</sup>

समकालीन कवियों में जिस तरह अधिकतर कवि अपनी अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता को लेकर आगे बढ़े हैं, राजेश जोशी भी उसी पांत के एक श्रेष्ठ कवि हैं। कविता उनके लिए आनंद नहीं बल्कि तनाव का विषय है। यह तनाव हम उनके पूरे कविता संसार में देख सकते हैं। कविता में संवेदनाओं को प्रस्तुत करने का उनका अपना एक विशेष ढंग और शैली है, जो उन्हें एक विशिष्ट पहचान देती है। 18 जुलाई 1946 को मध्यप्रदेश के नरसिंहगढ़ नामक स्थान में जन्मे राजेश जोशी जी का बीती जुलाई 75 वां जन्मदिन था। अपने समय के एक श्रेष्ठ कवि को याद करने का इससे अच्छा अवसर और क्या होता। अपनी सामाजिक प्रतिबद्धताओं के साथ राजेश जोशी आज भी निरंतर सक्रिय हैं और अपने कृतित्व से आज भी हिंदी साहित्य को लगातार समृद्ध कर रहे हैं।

संदर्भ :

1. जोशी, राजेश - प्रतिनिधि कविताएँ; राजकमल पेपरबैक, नई दिल्ली (2015); पृ. 25-26
2. वही, पृ.26
3. वही, पृ.74
4. वही, पृ. 79-80
5. वही, पृ. 80
6. वही, पृ. 93
7. वही, पृ. 99-100
8. वही, पृ. 100
9. वही, पृ. 85



**Volume 8 Issue 1**  
**Part 4**

SR. NO	NAME OF THE TOPIC	AUTHOR
1.	COMPASSION, CHARITY, HAPPINESS AND HUMOUR IN OSCAR WILDE'S SHORT-STORY 'THE MODEL MILLIONAIRE'	DR. BHAWNA CHAUHAN
2.	POSTMODERNISM IN GIRISH KARNAD'S 'NAGMANDALA'	DR. BALASAHEB SAGADE & DR. BHUSHAN VITTHAL TAGAD
3.	SOCIO-PSYCHOLOGICAL BARRIERS TO COMMUNICATION: A BIG CHALLENGE IN CLASSROOM TEACHING	DR. TANJEEN ARA KHAN
4.	EMANCIPATION OF WOMAN IN PREETI SHENOY'S NOVEL 'THE RULE BREAKERS'	HIRALAL SHIVRAM WAGHMARE
5.	SHASHI DESHPANDE'S THAT LONG SILENCE: A JOURNEY FROM SILENCE TO SELF-REALIZATION	NEELAM DEBATA,
6.	THE IMPACT OF COVID-19 PANDEMIC ON EDUCATION SYSTEM IN INDIA	DR. DASHRATH DNYANDEV KAMBLE
7.	THE IMPORTANCE OF MEDIA IN TEACHING AND LEARNING OF ENGLISH LANGUAGE AND LITERATURE	DR. PRASHANT TANAJI. CHAVARE & DR. BHUSHAN VITTHAL TAGAD
8.	OPERATIONAL HEGEMONY IN MANJULA PADMANABHAN'S HARVEST	DR. MAHENDRA JAGANNATH DUTTE
9.	COMPARATIVE STUDY OF INDIAN AND WESTERN PHILOSOPHY WITH SPECIAL REFERENCE TO INDIAN PHILOSOPHICAL PROSE WRITER	DR. S. D. DESHBHRATAR
10.	ASPECTS OF NEOCOLONIALISM IN NURUDDIN FARAH'S SARDINES	SANTOSH CHANDRAKANT RADE
11.	HUMAN PREDICAMENT: THE QUEST FOR INDIVIDUALITY IN THE UNKNOWN CITIZEN BY W.H AUDEN	DR. RAJITA ANAND SINGH

**THE IMPACT OF COVID-19 PANDEMIC ON EDUCATION SYSTEM  
IN INDIA****DR. DASHRATH DNYANDEV KAMBLE,**

Assistant Professor in English,

Department of English,

Sambhau Baswant College of Arts and Commerce,

Shahapur, Tal. Shahapur Dist. Thane - 421601

**ABSTRACT:**

*The Covid-19 pandemic made a tremendous impact on education system in all over the world. Govt. of India declared one day 'Janta Curfew' on 22<sup>nd</sup> March, 2020 and after 25<sup>th</sup> March, 2020 a Lockdown was declared in different phases in India. All state Governments in India took some measures of start educational activities of school and colleges during the lockdown period. This paper aims to analyze 'The Impact of Covid-19 Pandemic on Education System in India', focusing on education during online teaching and assessment of students in this pandemic period. The educational institutions adopted digital technology for online education and started online teaching but several age-old teachers were not familiar with the online teaching platform and digital technology. The Corona pandemic and its lockdown period have also created several opportunities and losses in different sectors. The old aged teachers learned to use different softwares. Teachers used colorful digital pictures / images / videos etc. in their online teaching and hence it enhanced the quality of teaching. The trained teachers developed e-content tremendously for online. Covid-19 pandemic has adversely affected the whole education system in the world. Teachers and students all were confused about the examinations, evaluation system, and online teaching. The majority of educational institutions had not proper infrastructure for online teaching. In rural India, there is a problem of android mobiles, technology literacy, and mobile connectivity. If there are two or three educating children in the family of poor farmers and labours, they couldn't purchase two or three expensive android mobiles or laptops to their children for online education. The Covid-19 pandemic made various impacts on education system and as a result the education system changed drastically.*

**Keywords:** Internet, Pandemic, Covid, Digital, Lockdown, Online, Platform, Technology.**Introduction:**

The Covid-19 pandemic made a tremendous impact on education system in all over the world. It has disturbed the educational system and more than 200 countries are affected in all over the world. Most of the countries closed the educational institutions to stop the spreading of Covid-19. The Covid-19 pandemic is spread from China in all over the world and different countries declared the Lockdown strategy to control the spread of Covid-19. The new



रयत शिक्षण संस्थेचे,  
एस.एम.जोशी कॉलेज, हडपसर, पुणे-२८.  
नॅक-ए ग्रेड, संलग्न सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे

रयत शिक्षण संस्थेचे,  
एस. एम. जोशी कॉलेज, हडपसर, पुणे-२८.  
मराठी विभाग आयोजित  
आंतरराष्ट्रीय वेबिनार

विषय:मराठीतील १९६०नंतरचे विविध वाङ्मयीन प्रवाह व सद्य:स्थिती



प्राचार्य डॉ. चंद्रकांत खिलारे

प्रमुख संपादक

प्रा.डॉ.राजेंद्र ठाकरे

प्रा.डॉ.अतुल चौर

सहाय्यक संपादक

प्रा.डॉ.नप्रता मेस्त्री

प्रा.डॉ.संदीप वाकडे

शनिवार दि.११ सप्टेंबर २०२१

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Babu Ganpat.



Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205  
**Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.**

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

- 39) समकालीन स्त्रीवादी कथाकार— आशा बगे (दर्पण—दीर्घकथासंग्रह)  
डॉ. शीतल मारुती कोरडे, पुणे ||200
- 40) भारतीय स्त्रीवादी साहित्याचे सांस्कृतिक अनुबंध  
डॉ. चांदोजी सोपान गायकवाड, ता.विक्रमगड ||206
- 41) १९६० नंतरच्या मराठी साहित्यातील ग्रामीण स्त्री चित्रण  
डॉ. वैशाली शांताराम जाधव, नाशिक ||214
- 42) मराठीतील १९६० नंतरचे दलित वाङ्मयीन प्रवाह व सद्यस्थिती  
कु. वैशाली रामचंद्र धापोडकर, चंद्रपूर ||217
- 43) भटक्या विमुक्त जमातींच्या आत्मकथांचा प्रवाह  
राजकुमार बबन शेलार, जि. पुणे ||223
- 44) ब—बळीचा: आशयाचे विविध आयाम  
विजय बालघरे, पुणे ||226
- 45) जागतिकीकरण आणि आदिवासी मराठी साहित्य  
डॉ.कुंदा बाळासाहेब कवडे, जिल्हा अहमदनगर ||231
- 46) ग्रामीण साहित्य संमेलने: स्वरूप आणि उद्देश  
डॉ. नंदकुमार भाऊसाहेब उदार, जि. अहमदनगर ||235
- 47) कवी नारायण सुर्वे यांच्या सनद या काव्यसंग्रहातून व्यक्त होणाऱ्या जाणिवांचा अभ्यास  
प्रा. डॉ. लालबा दुमटकर, जि. अमरावती ||242
- 48) गुन्हेगार जाती—जमातीचे वैचारिक लेखनाची सद्यस्थिती  
डॉ. एम. के. शिंदे, औरंगाबाद ||246
- 49) साठोत्तरी मराठी—कवितेतील आई  
प्रा.डॉ. विजय रेवजे, सोलापूर ||251
- 50) १९६० नंतरचे आदिवासी मराठी साहित्य  
प्रा. राजू शंकर शनवार, जि. ठाणे ||253
- 51) साठोत्तरी मराठी वाङ्मय प्रवाह : प्रेरणा व प्रवृत्ती.  
डॉ.संदीप महादेव उल्हाळकर, जि.पुणे ||257

ही जीवनाला व्यापून उरणारी गोष्ट आहे.

समारोप :-

50

वेद आणि उपनिषदांमध्ये बापाला आकाशाहून मोठेपणा आणि आईला पृथ्वीहून श्रेष्ठत्व बहाल केले आहे. मराठी कवितेमध्येही आईचा मोठेपणा नेहमीच उच्चरवाने गायिला गेला आहे.

## १९६० नंतरचे आदिवासी मराठी साहित्य

प्रा. राजू शंकर शनवार

सोनीभाऊ बसवंत कला व वाणिज्य महाविद्यालय,  
शहापूर. जि. ठाणे

संदर्भ :-

१) प्रवीण बर्दापूरकर (संपा)- आई, साधना प्रकाशन, ४३१ शनिवार पेठ, पुणे, प्रथमावृत्ती, डिसेंबर २०१२, पृ. १७०.

२) प्रशांत मोरे (संपा)- माय अर्थात आईच्या कविता, प्रकाशक जितेंद्र आव्हाड, अष्टविनायक-कृपास्वरूप इनक्लोव्ह, पाचपाखाडी-ठाणे पूर्व, द्वितीयावृत्ती, ५ ऑगस्ट २००९, पृ. ३३

३) ऊनि, पृ. ५२.

४) ऊनि, पृ. ४३

५) ऊनि, पृ. ९१

६) ऊनि, पृ. ६८

७) ऊनि, पृ. ६५

८) ऊनि, पृ. ६६

९) ऊनि, पृ. ८२

१०) प्रेस - संध्याकाळच्या कविता, पौर्णिमा प्रकाशन, धरमपेठ, धंतोली, नागपूर, प्रथमावृत्ती, १९८६, पृष्ठ ३४

□□□

\*\*\*\*\*

‘आदिवासी साहित्य’ म्हणून ज्या साहित्याचा नामनिर्देश केला जातो, ते साहित्य सामान्यतः १९६० नंतर उदयाला आले आणि १९७५ नंतर ते अधिकाधिक प्रुष्ट होत गेले. स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर भारतीय समाज जीवनात परिवर्तन घडले. राजकीय स्थित्यंतर, शिक्षण प्रसार, पंचवार्षिक योजना यामुळे समाज जीवनात आमूलाग्र बदल झाला. लोकशाहीचा व शिक्षणाचा विचार तळगाळपर्यंत पोहोचला. आदिवासी नवशिक्षितांना शिक्षणामुळे व्यापक सामाजिक भान प्राप्त झाले. वास्तविक पाहता, आदिवासी समाज जीवनात माणूस म्हणून माणसाचा स्वीकार आणि माणूस म्हणून आलेल्या माणसाचा देव म्हणून स्वीकार एवढे उदात्ततेने मानवतेच्या संस्कार दृढमूल होताच य परंतु या पारंपरिक संवेदनेपेक्षा आधुनिक काळातील परिवर्तनाची दृष्टी आलेल्या सामाजिक भानाने त्याला दिली. स्वातंत्र्य, समता, बंधुत्व व न्याय या मानवी मूल्यांची जाण समाजात नव्याने निर्माण झाली. स्वराज्य झाल्या प्राप्त झाल्यानंतर सर्वसामान्य माणसाच्या अपेक्षा वाढल्या. त्याचबरोबर सर्वसामान्यांच्या अपेक्षा पूर्ण झाल्याने त्याविरुद्ध असमाधानाची भावना सुशिक्षित तरुणांमध्ये निर्माण झाली. ही भावना अस्तित्वात देखील आलेली दिसते. ‘माझे जगणे, माझे अनुभवणे भोगणे आणि माझ्या जमात

# विद्यावार्ता®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

The Education Society's

**P. D. Karkhanis College of Arts  
& Commerce, Ambernath**

Dist. Thane (Maharashtra) – 421501

**National E- Conference On**

**Emerging Issues in Humanities,  
Commerce & Management**

16 th November 2021

Guest Editor

**Dr. Vandana N. Purav**





- 14) A co-relational study on Psychosocial challenges faced, resilience and ...  
Ms. Lipika Mondal & Ms. Ishita Mandal, Kolkata ||65
- 15) चिरंतन कृषी विकास काळाची गरज  
श्रीमती डॉ. जाधव मिनाक्षी भास्कर, जि. उस्मानाबाद ||73
- 16) दहशतवादचा अर्थ व स्वरूप आणि उदयाची कारणमिमांसा  
डॉ. नामानंद गौतम साठे, जि. उस्मानाबाद ||76
- 17) जागतिकीकरण आणि मराठी ग्रामीण कथा  
डॉ. संदीप मेले, कुळगांव-बदलापूर ||79
- 18) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शिक्षण विषयक विचार आणि नवीन शिक्षण घोरण  
डॉ. शहाजी विश्वंभर कांबळे, जि. ठाणे (महाराष्ट्र) ||81
- 19) स्वातंत्र्योत्तर काळातील स्त्री-मुक्ती चळवळीची दिशा व दशा  
डॉ. विनोद संभाजी सोनवणे, जि.पालघर ||86
- 20) इतिहास लेखनातील प्रवाह  
प्रा. अनंत तुकाराम घरत, जि. रायगड ||90
- 21) ठाणे शहरातील शैक्षणिक स्थितीचे ऐतिहासिक मंथन  
प्रा.अनिल महादेव बोरडे, अंबरनाथ (ठाणे) ||96
- 22) भारतीय उदारमतवादी चळवळीचे राष्ट्र व समाज बांधणीतील योगदान: एक शोध  
सहा.प्रा. इब्राहीम जमन तडवी, जि. ठाणे ||99
- 23) बदलते समाजवास्तव आणि कथालेखिकांच्या लेखनातील स्त्रीप्रतिमा  
प्रा. कैलास कळकटे, जि. ठाणे ||102
- 24) जागतिकीकरण आणि बदललेले मराठी नाटक  
प्रा. लक्ष्मण दुंदुब उमवणे, जि. ठाणे ||105
- 25) आदिवासी साहित्यप्रकारची भविष्यकालीन वाटचाल  
प्रा.राजू शंकर शनवार, राहापूर, ठाणे ||111 \*
- 26) बदलते समाजवास्तव आणि मराठी कथनात्मक ग्रामीण साहित्य  
प्रा. संजय तुकाराम निचिते, अंबरनाथ ||114

25

## आदिवासी साहित्यप्रकाराची भविष्यकालीन वाटचाल

प्रा.राजू शंकर शनवार

सोनुभाऊ बसवंत कला व वाणिज्य महाविद्यालय,  
शहापूर, ठाणे

\*\*\*\*\*

आधुनिक भारताचा समाजशास्त्रीय विचार करताना बहुधा 'शहरी भारत' आणि 'ग्रामीण भारत' असे विभाजन केले जाते. असे विभाजन करताना एका महत्त्वाचा परिसरकडे आणि समूहाकडे आपले दुर्लक्ष होत आहे. हेही अनेकदा अभ्यासकांच्या लक्षात येत नाही. हा तिसरा भारत म्हणजे वनवासात राहणारा आदिम भारत होय. ह्याआदिम भारताचा शोध मानववंशशास्त्रज्ञ धर्मप्रसारक व लोकसाहित्याचे संग्राहक कसोशीने घेत आहेत. स्वातंत्र्योत्तर काळात आपल्या देशामध्ये ज्या विविध राजकीय आणि सामाजिक घडामोडी घडत आहेत त्याचा परिणाम म्हणून हा आदिवासी समाज वेगाने जागृत होत आहे. त्यांना एक नवे आत्ममान प्राप्त होत आहे. या समाजात साक्षरंची आणि शिक्षितांची संख्या अत्यल्प असली तरी मूठभर का होईना नवशिक्षित आणि उच्चशिक्षित तरुण या समाजातून पुढे येत आहेत. "आदिवासी समाज निर्धन असेल, निरक्षर असेल, पण तो असंस्कृत नाही हे लक्षात ठेवले पाहिजे. त्यांना स्वतःची स्वतंत्र आणि अर्थपूर्ण संस्कृती आहे. त्याला स्वतःची बोली आहे. रितिरिवाज आहेत. दैवते आणि धर्मविधी आहेत, सण-समारंभ व साहित्य कला आहेत."

वैदिक आणि त्यानंतरच्या काळात ह्या धर्तीच्या लेकरांकडे पाहण्याचा भारतीय समाज व्यवस्थेतील जनसामान्यांना व पुढारलेल्यांचा दृष्टिकोन हा उपहासात्मक व विघटनात्मक होता. आदिवासी संस्कृतीचे अभ्यासक व संशोधक डॉ. गोविंद गारे या विषयी लिहितात,

'आदिवासी म्हणजे निबीड अरण्यात नग्नार्थग्रवस्थेत राहणारे नरभक्षक, कच्चे मांस खाणारे, शिकार करून जगणारे असेच त्यावेळी लोकांना वाटत होते. आदिवासी हे नावही त्यावेळी रुढ झालेले नव्हते. आदिवासी हे निषाद, किरात, वाल्या कोळी आणि शबरीह्याचे वंशज आहेत व त्यामुळे ते दुग्धचारी, दुष्ट आणि क्रूर आहेत. अशी लोकांची कल्पना होती, रामायण महाभारताच्या काळापासून जुन्या वाङ्मयात त्यांचे वर्णन कावळ्यापेक्षा काळे, धरतीचे पापी प्राणी, खुजे, चपटव नाकाचे, लुटारू, राक्षस, नरभक्षक वगैरे उपहासात्मक वहीन लेखणाऱ्या शब्दांनी केलेले आढळते. सहाजिकच लोकांमध्ये त्यांच्या संबंधाने गैरसमज होते.

२

'अलीकडे 'आदिवासी' हा शब्द विशिष्ट भाषा बोलणाऱ्या विशिष्ट जीवन पद्धतीने व परस्परांनी नटलेल्या आणि शेकडो वर्षे जंगला पहाडात जीवन जगत असताना आपली धार्मिक आणि सांस्कृतिक मूल्य जोपासणाऱ्या मानव समूहाची ओळख करून देण्यासाठी वापरला जातो. 'आदिवासींचे कैवरी पूज्य ठक्करबाप्पा व पूज्य गांधीजी ह्यांनी त्यांना मूलनिवासी म्हटले आहे. अलीकडे डॉ. भाऊ मांडवकर आणि डॉ. गोविंद गारे ह्या अभ्यासकांनी ह्या वन्य जमाती साठी 'आदिम' हा शब्द वापरला आहे. भारतीय घटनाकाराने त्यांचा अनुसूचित जमाती (बीमकनसमकजतपइम) असा उल्लेख केला आहे. आदिवासी म्हणजे निश्चित कोण, आदिवासी उरविण्याचा शास्त्रीय कसोट्या कोणत्या हे प्रश्न महत्त्वाचे आहेत. काही पाश्चात्य विद्वानांच्या अभ्यासकांच्या व शास्त्रज्ञांच्या व्याख्या अशा—  
गिलीन आणि गिलीन ह्यांच्या मते—

'एका विशिष्ट भू-प्रदेशावर राहणारा, समान बोली बोलणारा व समान सांस्कृतिक जीवन जगणारा पण अक्षर ओळख नसलेल्या स्थानीय गटांच्या समुच्चयाला आदिवासी म्हणतात'. ४

आदिवासी ह्याशब्दाची व्याख्या करताना डब्ल्यू. जे.पेटी म्हणतात, 'समान बोलीभाषा बोलणाऱ्या व एकाच समान भू-प्रदेशावर वास्तव्य करणाऱ्या समूहाला आदिवासी समाज असे म्हणतात'. ५

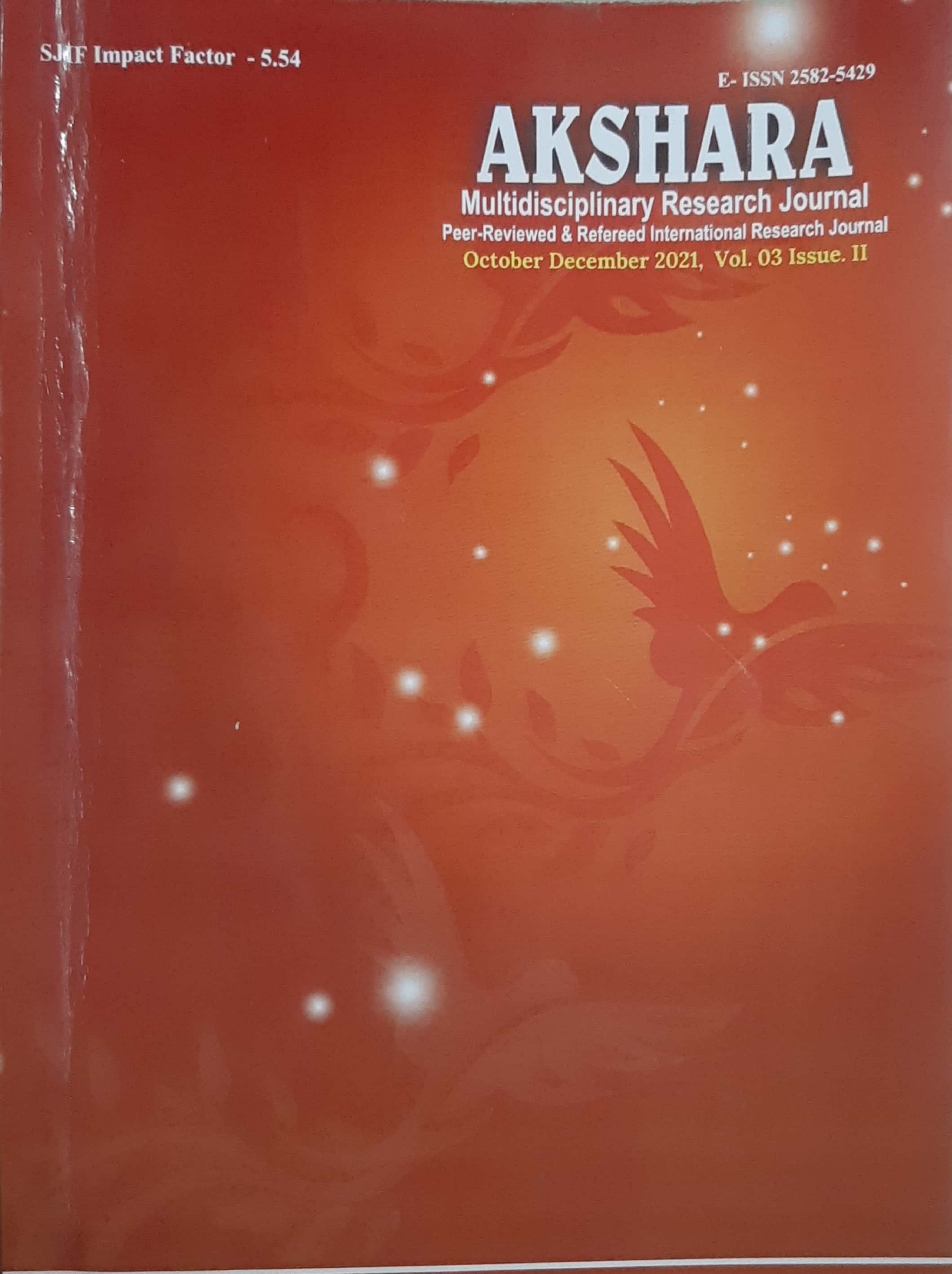
आदिवासी साहित्य हा शब्द उच्चारताच

SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

# AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal  
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal  
October December 2021, Vol. 03 Issue. II





*Akshara Multidisciplinary Research Journal*  
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

October- December 2021

Vol. 03 Issue. II

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.54



TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services



International Society for Research Activity (ISRA)  
Journal-Impact-Factor (JIF)



Digital Online Identifier-  
Database System

for International Digital and Virtual Library

**Akshara Publication**

Plot No 143 Professors colony,

Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

## Representation of Indian Culture and Gender Discrimination in Shashi Deshpande's Novels : A New Perspective

**Dr. Dashrath Dnyandev Kamble**

Assistant Professor in English, P. G. Department of English,  
 Kambhaji Parnavi College of Arts and Commerce, Shahapur Dist. Thane  
 E-mail: drdashrathkamble@gmail.com, Mob. No.: 9860279244

**Abstract**

Shashi Deshpande is a very popular Indian English Novelist who has written popular novels. Her novels focus on the gender discrimination, feminism and manmade patriarchal system in Indian society as is experienced by women. This Research paper focuses on the 'Representation of Indian Culture and Gender Discrimination in the Novels of Shashi Deshpande: A New Perspective'. In our Indian culture, society always treats woman by the practice of inequality. A girl (daughter) in the family is taught that she is a girl and she should behave according to the customs and traditions. The concept of womanhood is easily taught to a girl in her own house. This is the gender discrimination which becomes a huge problem in future. In our Indian society, the family becomes complete when a son is born in the family and a woman becomes satisfied and fulfilled when she gives a birth to a male child. Parents also feel that the daughters are a burden on the family and much weaker in comparison to sons. There are the basic roots of gender discrimination in our society. But we have to see this problem from new perspective and new sight. So, nowadays, Indian society has changed in its perspective towards women due to Indian constitution, education and social awareness, modernization, globalization and industrialization. Now daughters are equally treated as sons in the family. Deshpande has given a new sight (drishti) to Indian society to respect women in our family for the future nation building.

**Keywords:** discrimination, patriarchal, traditions, psyche, new sight (drishti), culture.

Shashi Deshpande is a highly talented woman novelist in Indian English Literature. She has written ten popular novels, short stories and books for children. Her novels successfully and realistically represent the Indian culture and gender discrimination. Her novels are like a mirror to Indian society. Her novels give us a new sight (drishti) to Indian society to respect women in our family for a strong nation building in future. By reading her novels, we get a new perspective regarding women and their exploitation due to gender discrimination in our Indian culture. So S. K. Mishra rightly remarks that, "The novels of Shashi Deshpande are about women's self quest and struggle to free themselves from the restrictions imposed by society, culture and nature" (123).

Shashi Deshpande's popular novel, *That Long Silence*, is also an acclaimed novel. In this novel, Deshpande presents well educated middle class woman who lives with her husband, Mohan, and her children Rahul and Rati. Jaya plays the role of loving mother and wife who is similar to her relatives. Jaya herself has experienced gender discrimination in her family. We find the example of gender discrimination Ramukaka's sketch of the family lineage tree. Ramukaka is Jaya's paternal uncle who says: "Look Jaya, this is our branch. This is our grandfather's wife's great grandfather - and here are the boys - Shridhar, Janu, Dinkar, Kavi. Jaya exclaims, 'I'm not here'. Ramukaka looks up at her with irritation impatience at her stupidity and says, 'How can you be here? You don't belong to this family! You are married and you are now part of Mohan's family. You have no place here'" (142-143). "Even Jaya cannot find

a place in the sketch of family tree of her husband, Mohan. This represents the gender discrimination in all over the Indian culture. In this social system are the culture of gender discrimination and patriarchal thinking.

There are two other beautiful examples of ill-treatment which lead to married women. Kirtan, Jaya's mad cousin, is also a victim of gender discrimination. In *That Long Silence*, Deshpande's *That Long Silence*, reveals the issue of gender discrimination. Deshpande finds that our family sees its own children unequal which makes unequal status of sons and daughters in a family. So Tapan Basu finds that the present novel is a story of "a girl who has spent a lifetime in surrender of her will to social mores and customs that had relegated a woman to a second class status" (98).

Really, all women in this novel are badly treated because they are females and not males. As per the modern new perspective, the ill-treatment to women in family and gender discrimination will not be useful for the balanced development of society. Really, the role of women in Indian culture is very important. No Indian festival is celebrated without the presence of women. So N. Selvaraman rightly remarks: "The concept and image of woman has undergone a positive change. No society can ever progress without an active participation of women who are an integral part of human civilization in its over-all development" (70).

The novel, *Roots and Shadows* (1983), also depicts the theme of gender discrimination and exploitation of women in male dominated Indian culture. The young protagonist, Indu, rebels against the rules of traditional joint family. Here we find that a girl in family is taught that she is a girl and she should behave according to the customs and tradition. In a family, it is taught to a girl-child to play the role of submissive wife and daughter-in-law, a disciplined daughter and sacrificing mother. In our Indian culture, the virginity of a girl is given too much importance. So the family enforces a number of restrictions on a daughter when she reaches in her puberty. In a conversation with Naren, Indu tells Naren that how the gender discrimination was taught in our family to her. Indu says to Naren, "How will you understand, Naren, you who have never had to fight to run aggressive, to assert yourself? How easily it comes to you, just because you are a man, for me as a child they had told me 'I must be obedient and unquestioning. As a child they had told me I must be meek and submissive. Why? I had asked 'Because you are a female. You must accept everything, even defeat with grace because you are a girl, they said. It is only way, they said, for a female to live and survive'" (174).

The concept of womanhood is easily taught to a girl in her own house. It also sheds light on the gender discrimination. In our family, a girl is made aware that she is a girl or woman and the boy is also made aware of his manhood. Indu reminds that how her first womanhood was introduced to her. Naren asks a question to Indu that why she always fought for her womanhood. Here Indu reminds us her conversation with her Kaki. Indu's Kaki said to Indu, "You're a woman now," Kaki had told me "You can have babies yourself" (174). "And I don't forget", she had cried, "for four days now you are unclean. You can't touch anyone or anything." "And that had been my introduction to the beautiful world of being a woman" (87).

A girl is made aware in the family that she is a girl who should behave according to the rules and codes of conduct given by the culture and tradition. Simone De Beauvoir rightly remarks: "One is not born but rather becomes a woman (...), it is civilization as whole that produces this creature (...) described as feminine" (Simone De Beauvoir: 26). "It means that woman is cultured and made aware in our family and society that she is a female or woman. It is the real cause and the commencement of gender discrimination in our society.

In the novel, *The Binding Vine*, Deshpande handles the theme of gender discrimination and presents how Indian society treats boys and girls differently in the family. A son in the family is always considered a big support for parents because the parents can rest their heads

International Research Fellows Association's

# RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue : 282

November 2021

## Recent Trends in Research



Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,

Assist. Prof. (Marathi)

MGV's Arts & Commerce College,  
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :

Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)

Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)

Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)

Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)



For Details Visit To : [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net)

SWATIDHAN PUBLICATIONS



26	प्रेमानंद गज्वीच्या 'किरवंत' नाटकातील 'स्त्री' जीवन दर्शन	प्रा. महेंद्र सोनवणे, डॉ. शिरीष पाटील	144
27	साहित्याची भाषा आणि ग्रामीण वाचक	प्रा. अमोल घुमरे	148
28	तौलनिक साहित्य संशोधन - एक ओळख	प्रा. प्राची जोशी	153
29	स्वातंत्र्यानंतरच्या दलित कवितेचे बदलते स्वरूप	प्रा. राजू शनवार	161 *
30	लाला लजपत राय यांचे हिंदू संघटनेतील योगदान	डॉ. राजेंद्र रासकर	166
31	ब्रिटिश सत्तेचे भारतावरील सामाजिक परिणाम	डॉ. भानुदास शिंदे	170
32	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे महिला सक्षमीकरणातील योगदान	मनिषा खरे	174
33	अहमदनगर जिल्ह्यातील धनगर समाजाचा आर्थिक विकास	डॉ. अशोक बिडगर	176
34	अंबरनाथ शहराचा विकास	डॉ. किशोर काजळे	184
35	बाणभट्टाच्या साहित्यात वर्णित आयुर्वेदिक औषधी वनस्पतींचा कोरोना महामारीत झालेला उपयोग	मिनल नेहते, डॉ. भाग्यश्री भलवतकर	191
36	गॅस सिलेंडर भाववाढीचा ग्रामीण भागातील गृहिणीवर झालेला परिणाम : एक अभ्यास	डॉ. सुरेश बन्सपाल	198
37	पर्यावरण ऱ्हास व शाश्वत विकास	प्रा. शिवाजी गायकवाड	202
38	प्राचीन भारतातील शिक्षण व्यवस्था	प्रा. आर. के. सूर्यवंशी	207
39	अंत्योदय योजनेची अंमलबजावणी, त्यापुढील आव्हाने व उपाययोजना	किशोर भिसे	211
40	भारतातील (FDI) प्रत्यक्ष विदेशी गुंतवणुकीचे क्षेत्रीय विश्लेषण	देवानंद मंडवधरे	216
41	दक्षिण आशिया - सुरक्षा संदर्भात क्षेत्रीय आणि बाह्य शक्तींची भूमिका	डॉ. एन. झेड. पाटील	221
42	राष्ट्र उभारणीसाठी अंगणवाडी सेविकांचे योगदान	वनिता बेले, प्रोफेसर डॉ. प्रज्ञा बागडे	231
43	ग्रंथपालन व्यवसायाची उत्तम पद्धती : शोध आणि बोध	प्रा. तुळजाराम खैरे	238
44	शेती व्यवसायासमोरील समस्या, धोके, अनिश्चितता व त्यावरील उपाययोजना	प्रा. डॉ. नीता सुधाकर वाणी	241
45	قاضی عبدالاستار بحیثیت تاریخی ناول نگار	Mohd Iqbal Wani	246

*Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.*

*- Chief & Executive Editor*



## स्वातंत्र्यानंतरच्या दलित कवितेचे बदलते स्वरूप

प्रा. राजू शंकर शनवार

सोनुभाऊ बसवंत कला व वाणिज्य

महाविद्यालय, शहापूर, जि. ठाणे.

८८०५२४१२८१/९२७१४७९२३१

rajushanwar@gmail.com

आपल्या भारत देशाला १५ ऑगस्ट १९४७ ला स्वातंत्र्य मिळाले. स्वातंत्र्यपूर्व कालखंडात गौतम बुध्द, संत कबीर, म. ज्योतिराव फुले व छत्रपती शाहू महाराज या दलित साहित्याच्या प्रेरणा होत्या. स्वातंत्र्य मिळेपर्यंत शुद्रांची समाजात 'दलित' म्हणून हेटाळणी होत होती, ही गोष्ट लांछनास्पद होती. स्पृश्य आणि अस्पृश्य हे दोन्ही वर्ग एकमेकांत मिसळून जावेत म्हणून विठ्ठल रामजी शिंदे यांनी आयुष्यभर प्रयत्न केले पण स्पृशांनी अस्पृश्यांना शतकानुशतके इतके दूर ठेवले की संघर्ष करूनच जातीयव्यवस्थेचे निर्मूलन झाल्याशिवाय दोन्ही वर्ग एकमेकांत मिसळले जाणे शक्य नाही अशी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पूर्ण खात्री झाली होती म्हणून दलित समाज 'लढाऊ वर्ग' झाल्याशिवाय गत्यंतर नव्हते.

हिंदू धर्माचा त्याग करून बौद्ध धर्माचा स्वीकार केल्यामुळे चातुर्वर्ण्यावर आधारलेल्या समाजव्यवस्थेच्या दास्यातून सर्वस्व वंचित अस्पृश्याची मुक्तता झाली आणि ते नवबौद्ध म्हणून ओळखले जाऊ लागले. धर्मव्यवस्थेत त्यांच्यावर सामाजिक दास्य लादले गेले तर ग्रामव्यवस्थेने त्यांना बहिष्कृत करून गावकुसाबाहेर ढकलले. सामाजिक व्यवस्थेने त्यांच्यावर हलकीसलकी, हीन कामे लादली होती. त्यामुळे अस्पृश्य समाज माणूसपणाला पारखा झाला होता. अस्पृश्य नवबौद्ध झाल्यावरही त्यांना अन्याय, अत्याचार सहन करावे लागले, त्यांची उपेक्षा होऊ लागली.

डॉ. बाबासाहे आंबेडकरांच्या प्रयत्नाने दलित वर्गाला शिक्षणाचा मार्ग खुला झाला. त्यांना आत्मभान आले. हा समाज आपला आहे. या समाजात आपल्याला समान हक्क, समान संधी मिळाल्या पाहिजेत ही जाणीव त्यांना झाली. १९२७ मध्ये डॉ. बाबासाहेबांनी गुलामगिरी लादणाऱ्या मनुस्मृतीचे दहन केले तसे महाडच्या चवदार तळ्याचा सत्याग्रह केला. या घटनांनी दलितांना आत्मबळ दिले, दूरगामी दृष्टी दिली, त्यांची भूमिका विद्रोहाची आणि निषेधाची होती. 'शिका, संघटीत व्हा, व संघर्ष करा' या डॉ. बाबासाहेबांच्या शिकवणीतून दलितांची अस्मिता जागृत झाली, आत्मभान आलेले दलित स्वतःला व्यक्त करू लागले. दलितांनी दलितांविषयी लिहिलेल्या साहित्याचा प्रवाह सुरू झाला.

दलित साहित्याला पूर्व इतिहास असला तरी साहित्य प्रवाह म्हणून १९६० नंतर विचार होऊ लागला. कथा, कविता, कादंबरी, आत्मकथन, नाटक या साहित्यप्रकारांच्या माध्यमातून दलित साहित्य समोर आले. दलित साहित्याचे एक वैशिष्ट्य म्हणजे अनुभवविश्व आणि आशय हे एकजीव होऊन आलेले आहे. दलित कवितेचे मराठी



# ERJ

ISSN: P-2455-0515  
E-2394-8450

*Educreator Research Journal*

Peer Reviewed Journal

SJIF Impact Factor 7.092

VOLUME-VIII, ISSUES- VI

NOV - DEC 2021



**DR. BHUPEN BANSOD**

- 
- 19 कालिदास की रचनाओं में पर्यावरण एवं प्रजाति संरक्षण जागरूकता एक 140 - 145  
अध्ययन  
डॉ० अर्चना पाल
- 20 *Isolation, Purification And Characterization Of Antibacterial Peptide 146 - 152*  
*From Soil In Panvel Region*  
Sushilkumar S. Ghadage
- 21 *Solution Of Partial Differential Equations By Double Laplace – 153 - 160*  
*Upadhyaya Transform*  
Ganesh S. Kadu
- 22 *Solution of Population Growth and Radioactive Decay Problems by 161 - 166*  
*Yang Transform Method*  
Rohidas Shrirang Sanap
- 23 *A Study of the Effectiveness of Training Programme to Enhance 167 - 176*  
*Online Teaching Skills of Secondary School Teachers*  
Mrs. Pratibha Ursal
- 24 सहकाराचे शिक्षणातील स्थान 177 - 180  
डॉ.संतोष सुभाष बुधवंत
- 25 *Virtual Learning: An Innovation in Education 181 - 183*  
Dr. Joan Lopes



### सहकाराचे शिक्षणातील स्थान

डॉ.संतोष सुभाष बुधवंत,

<sup>1</sup> सहाय्यक प्राध्यापक, सोनुभाऊ बसवंत महाविद्यालय, शहापूर

Copyright © 2022 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

### प्रस्तावना :-

जीवनात कोणतीही गोष्ट सहकार शिवाय शक्य होत नाही. अगदी व्यक्तीला पाणी पिण्यासाठी सुद्धा 'तोंडाला हाताचे सहकार्य' घ्यावे लागते. निसर्गातील प्रत्येक गोष्ट ही सुद्धा सहकाराचा संदेश देते. झाडे सुद्धा अनेक गोड फळे देतात पण त्यांना सुद्धा अनेक मुळांच्या सहकार्याने उभे राहावे लागते. पक्षी प्राणी यांना सुद्धा स्वतःच्या संरक्षणासाठी नेहमी कळपाने राहावे लागते. आपल्याला जीवनात मोठे होण्यासाठी, प्रगतीसाठी देखील अनेकांच्या सहकार्याची गरज असते.

एकूणच सहकार हाच जीवनाचा खरा आधार असताना त्याबद्दल मोठ्या प्रमाणात समाज जागृती करण्याची गरज असताना व जेथे त्याचे महत्त्व पोहोचले नाही तिथे ते अभ्यास रूपात पोहचविण्याचे कार्य करणारे विशेष शिकविले जाण्याची गरज असताना सुद्धा सहकारसारखा विषय अभ्यासक्रमातून वगळला जात आहे. ही मोठी चिंतेची बाब आहे.

### संशोधनाचे महत्त्व :

मुंबई ही आर्थिक उलाढाली बाबत भारतीय अर्थव्यवस्थेच्या म्हणून ओळखली जाते. राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्तरावरील सर्व आर्थिक व्यवहारांचे चे मूळ स्थान म्हणून मुंबईकडे पाहिले जाते. जगातील प्रमुख शहरांमध्ये लोकसंख्येच्या बाबतीत मुंबई हे शहर दुसऱ्या क्रमांकावर आहे की, ज्याची लोकसंख्या 14 मिलीयन इतकी आहे. तर कोकणातील विविध जिल्ह्यांमध्ये सर्वात प्रमुख व मोठा असलेला ठाणे जिल्ह्याची लोकसंख्या ही जवळ-जवळ एक कोटीच्या आसपास आहे. इतकी मोठी लोकसंख्या असणाऱ्या मुंबई विद्यापीठांतर्गत असणाऱ्या महाविद्यालयात अर्थशास्त्र या विषयांतर्गत सहकाराचा अभ्यासक्रम शिकवला जात असेल. महाराष्ट्राच्या आर्थिक विकासात सहकार्याचा सिंहाचा वाटा असताना त्यातील मुंबई व कोकण विभागाचा सहभाग किती? याचा पुनर्विचार होणे गरजेचे आहे.

सतत धावपळीचे जीवन जगणारे मुंबई तर हे विभक्त व्यवस्थेचे पुरस्कर्ते झालेले आहेत. नाते, संस्कार, घरातील मोठे,

Impact Factor-8.575 (SJIF)

ISSN-2278-9308

# *B.Aadhar*

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

**Multidisciplinary International Research Journal**

**March -2022**

ISSUE No- (CCCXL ) 340

**The Relevance of The Feminism Movement in the Twenty -First Century**



**Chief Editor**

**Prof. Virag S. Gawande**

Director

Aadhar Social Research &, Development  
Training Institute, Amravati.

**Editors**

**Dr. Chetana Yogesh Patil**

Convener & Vice Principal , Head,  
Women Development Cell  
Arts, Commerce and Science College,  
Onde, Tal. Vikramgad, Dist. Palghar

**Executive-Editors**

**Dr. Vinod S. Sonawane**

I/C Principal,

Arts, Commerce and Science College, Onde,  
Tal. Vikramgad, Dist. Palghar

**Editors**

**Dr. Basweshwar Pandagale**

Co-Ordinator

HOD, Department of Political Science  
Arts, Commerce and Science College,  
Onde, Tal. Vikramgad, Dist. Palghar



**This Journal is indexed in :**

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

**Aadhar P**UBLICATIONS

**INDEX**

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	A Historical Study Of Women Sufis In South India	Mrs. Salma N. S.	1
2	A Study of Educational Development of Tribal Women an Indian Perspective	Prof. Vikas Vasram Ade	5
3	Dr. Babasaheb Ambedkar's Movement for Women Empowerment and Its Impact on Society	Dr. Dashrath Dnyandev Kamble	13
4	Dr. Kamala Sohoni: The pioneering Woman Scientist of Maharashtra	Dr. Abhidha Dhumatkar	17
5	Moving Towards Women Empowerment Through Seventy Third Constitutional Amendment Act	Dr. Mrs. Anjali Gaidhane	20
6	Ecofeminism in the Context of India with Reference to Environmental Movements	Dr. Tanaji Pol	24
7	Ecofeminism: Concept and Nature	Vandana Kakade	28
8	Ecofeminism: The Feminism of Ecology	Smt. Asha Padmakarrao Bamane	31
9	Feminism and Media: Femvertising- Women Empowerment in advertising.	Ms. Shilpa Suryawanshi	34
10	Feminism and Representation of Women Indentites in Indian Cinema	Prof. Bhavana Singh / Prof. Minu Paul	38
11	Feminism: Concept and Nature	Dr. Rakshase Sidharth Gunaji	47
12	Five Feminist Economists: Who Change the Way We See the World	Dr. Ankush L. More	56
13	Hashtag Movements in Feminism	Sharvari Shailesh Sawant / Sakshi Jeevan Asawale	62
14	History of Feminist Movements Worldwide	Dr.M.P.Khobragade	67
15	Image of Women in Indian Media, Psychological Perspectives and Feminism	Mrs. Aditi V. Yadav	70
16	Impactful Role of Brave Women for Freedom Struggle in India and Their Contribution-Commemorating 75 years of India's independence	Mrs. Monika H.Pawar	75
17	Raziya Sultan The First And Only Muslim Female Ruler Of Delhi	Dr. Anjali R. Andrew	79
18	Role of Corporate Social Responsibility: An overview of Women Empowerment	Dr. B. B. Rahane	82
19	Role of Self - Help Groups in women empowerment through Microfinance: Socio - Economic Development and Employment.	Mr. Vipul Manohar Tandel	89
20	Significant Contribution Of Women In India's Freedom Struggle	Rutuja Sharad Raut	98
21	The Empowerment of Women in India: Role of Dr. Babasaheb Ambedkar	Dr. Lata Digambar Dhende	102



## **Five Feminist Economists: Who Change the Way We See the World**

**Dr. Ankush L. More**

HOD & Professor UG & PG Department of Economics, Sonubhan Baswant College of Arts & Commerce, Shahapur, Dist. Thane-421601 (M S)

### **Abstract:**

Economics is one of the most influential disciplines. By changing the way, the world is understood, economics has indeed changed the world. The principles of economics have charted out the course of policies, impacting countless lives in myriad ways. However, these principles are based on highly reductionist and sexist assumptions.

One way in which economics can be sexist is by not counting unpaid work, much of which is carried out by women in the household, such as cooking, cleaning, and care work. These activities may be purchased as services in the market, but remain difficult to impute value to. Another way in which economics can be sexist is by conceiving the household as an altruistic joint utility maximiser, that is, as an entity which works towards the best interests of all its members. What remains invisible in such a conception of the household is the various negotiations between members with conflicting interests and differential decision-making powers.

Economics generally assumes that all individuals are equal, in terms of the choices that they can make, and ascribes rationality to individual utility maximization. This assumption fails to take into account the differential social positions of individuals, which may constrain their choices or give them power over others. These are but a few of the dilemmas in mainstream/textbook economic thought. Sexism in economics does not end here. Even at the professional level, economics can be extremely sexist, by devaluing the contributions of women.

### **Key Words:**

Feminist, Economists-Economics, Reductionist and Sexist, Land Rights and Empowerment, Gender and Labour, Violence Against Women, Education as Investment and Gender Training.

### **Introduction:**

Feminist economist and economics analyses the interrelationship between gender and the economy. Thereby, feminist economics also takes the unpaid, non-market intermediated part of the economy and society into account and examines the driving forces behind common dichotomies such as economic-social, productive-reproductive, masculine-feminine, paid-unpaid or public-private. Moreover, feminist economics analyses patriarchy and capitalism as interrelated forms of dominance. Against this background, questions arise about the distribution and disposal of property, income, power, knowledge and the own body. Since liberal and constructivist research traditions exist alongside critical ones within feminist economics, it cannot be considered a coherent paradigm. Yet, all of these approaches deal with reproductive labour and care. Furthermore, feminist economics analyses the relationships between state policy, science, language, growth and gender relations. Feminist economics criticizes that economics is blind with respect to women's experiences and highlights that women are hardly represented in the economic discipline, which in turn affects scientific findings. Hence, feminist economics point out the fact that scientific findings, common ideas, and society as a whole are all formed by power relations. For instance, the analysis of gender relations has only slowly entered the field of economics even though the women's movement has been being active for centuries.

Main Problems as well as Central Questions focused on by Feminist Economics and Economist are:

1. Why have housework and care not been recognized as work in economics since the 19th century and why are they not dealt with in economic theories?



critical feminist economists expound the problems of the interdependency of capitalism and gender inequalities as well as the necessity of reproductive labour for the capitalist production process.

A further central criticism of feminist economics addresses the neoclassical conception of the individual, the homo economicus, who acts rationally and is utility maximizing on the market and represents a male, white subject. In contrast, feminist economic sees individuals as embedded in social and economic structures, which determine their impossibility as well as possibility for action. Furthermore, the concept of the homo economicus assumes the existence of an irrational, female and emotional (among other characteristics) other, who is assigned to the 'female', or the so-called 'private' sphere. A further point of departure for critique by feminist economics is the division between the spheres of the market and the household. On the market, productive (male) actions take place; in the 'private' sphere, unproductive (female) activities occur. First, this perspective marks unpaid activities as unproductive and as not generating value. Second, it neglects the role of reproductive activities in the production process. This also has consequences for macroeconomic aggregates, since those activities are not accounted for in national accounts. This is the reason why, for feminist economics, indicators such as the GDP are not suited for measuring wealth.

#### References:

1. **Bauhardt, C., and G. Çağlar (2010):** Gender and Economics. Feministische Kritik der politischen Ökonomie. Wiesbaden: VS Verlag für Sozialwissenschaften.
2. **Biesecker, A., C. Wichterich, and U. von Winterfeld (2012):** Feministische Perspektiven zum Themenbereich Wachstum, Wohlstand, Lebensqualität. Kommissionsmaterialie M-17(26)23.
3. **Çağlar, G. (Hrsg.) (2009):** Gender and Economics. Feministische Kritik der politischen Ökonomie. Wiesbaden: VS Verlag für Sozialwissenschaften, 18-48.
4. **Code, L. (2014):** Feminist Epistemology and the Poitics of Knowledge: Questions of Marginality. The SAGE Handbook of Feminist Theory, 9-25.
5. **Code, L. (1981):** Is the sex of the knower epistemologically significant? 12(3□4), 267-276.
6. **Federici, S. (2012):** Aufstand aus der Küche. Reproduktionsarbeit im globalen Kapitalismus und die unvollendete feministische Revolution, Reihe: Kitchen Politics, Band 1, Münster: Edition Assemblage.
7. **Federici, S. (2011):** Feminism and the Politics of the Commons. Veröffentlicht in The Commoner, 24.01.2011. <http://www.commoner.org.uk/?p=113>
8. **Ferber, M. A. (2003):** A feminist critique of the neoclassical theory of the family. Women, family, and work: writings on the economics of gender: 9-24.
9. **Ferber, M. A. und Nelson, Julie A. (Hrsg.) (1993):** Beyond Economic Man. Feminist Theory and Economics. Chicago: University of Chicago Press.
10. **Habermann (2010):** Hegemonie, Identität und der homo oeconomicus. Oder: Warumfeministische Ökonomie nicht ausreicht. In: Bauhardt, C. und G. Çağlar (Hrsg.): Gender and Economics. Feministische Kritik der politischen Ökonomie. Wiesbaden: VS Verlag für Sozialwissenschaften, 151-173.
11. **Habermann, F. (2008):** Der homo oeconomicus und das Andere. Baden-Baden: Nomos.
12. **Haidinger, B. und Knittler, K. (2014):** Feministische Ökonomie: Intro. Mandelbaum.
13. **Haraway, D. (1988):** Situated knowledges: The science question in feminism and the privilege of partial perspective. Feminist studies 14(3), 575-599.
14. **Harding, S. (1991):** Whose Science? Whose knowledge? Thinking from women's lives. Itaca, NY: Cornell University Press.
15. **Hartsock, N (1998):** Marxist Feminist Dialectics for the 21st Century. Science & Society, 62(3). 400-413.
16. **Haug, F. (2008).** Die Vier-in-einem-Perspektive: Politik von Frauen für eine neue Linke. Argument-Verlag.

**B.Aadhar** International Peer-Reviewed Indexed Research Journal



Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, 341 (CCCXLI)

ISSN :  
2278-9308  
March,  
2022

Impact Factor - 8.575

ISSN - 2278-9308

# B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed  
Multidisciplinary International Research Journal

**March-2022**

ISSUE No- (CCCXLI) 341

**The Relevance of The Feminism  
Movement in the Twenty -First Century**

**Prof. Virag.S.Gawande**

Chief Editor

Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

**Dr. Vinod Sambhaji Sonawane**

Executive Editor

IC Principal

Arts, Commerce and Science College, Onde, Tal. Vikramgad, Dist. Palghar

**Dr. Chetana Yogesh Patil**

Editor

Convener & Vice Principal, Head,  
Women Development Cell

**Dr. Basweshwar Pandagale**

Editor

Co-Ordinator

HOD, Department of Political Science

**Aadhar International Publication**

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

© All rights reserved with the authors & publisher

Website - [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

Email - [aadharsocial@gmail.com](mailto:aadharsocial@gmail.com)



20	शिवरायांची नातसून जिजाबाई साहेब: एक ऐतिहासिक अभ्यास डॉ. विनोद संभाजी सोनवणे	88
21	मार्क्सवादी स्त्रीवाद : संकल्पना आणि स्वरूप प्रा.डॉ.वृषाली लक्ष्मीकांत फुके	92
22	लिंगभाव आणि स्त्रीवाद डॉ. चांदोजी सोपान गायकवाड	96
23	राष्ट्रभारणीत स्त्री मुख्यमंत्र्यांचे योगदान एक चिकित्सा प्रा.सुनिलदत्त गोडसे	101
24	मार्क्सवादी स्त्रीवादी: एक आकलनडॉ. सूर्यकांत लक्ष्मणराव शेळके	104
25	शाम्भत विकासात पद्मश्री तुलसी गौडा व पद्मश्री राहीबाई पोपरे यांचे योगदान प्रा.बनसोडे राहुल प्रकाश	109
26	शिवकालीन स्त्री जीवन डॉ. श्रेया संजीव दाणी	113
27	सक्षमीकरण महिलांच्या सर्वांगीण विकासाचे साधन डॉ. सोमा पी. गोंडाणे	116
28	स्त्रियांचे समाजातील स्थान - काल आणि आज डॉ. रवींद्र भा. घागस / प्रा. प्रकाश विष्णू घरत	120
29	स्त्रीवाद: समस्या, आव्हाने व उपाय कल्पना राजेश कनके-सिद्धेवाड	123
30	स्त्रीवाद आणि प्रसार माध्यमे (संजना भट : स्त्री आणि भारतीय कौटुंबिक संस्कृती) प्रा स्वाती हरिभाऊ काटे	128
31	स्त्रीवाद : सिद्धांत आणि व्यवहार प्रा.डॉ. अर्जुन येरगे	130
32	स्त्रीवाद आणि प्रसारमाध्यमे : दैनिक प्रजावणी वृत्तपत्राची भूमिका प्रा.अंकुश सुर्यवंशी	134
33	स्त्रीवाद आणि आदिवासी महिला - विशेष संदर्भ पालघर जिल्हा प्रा. जी.एम.घुटे	138
34	स्त्रीवाद आणि प्रसारमाध्यमे प्रा.संजय महेबूब तडवी	143
35	स्त्रीवाद आणि स्त्री - पुरुष समता डॉ.राम पांडूरंग सावदे	146
36	स्त्रीवाद व आदिवासी महिला प्रा.सी. आशिषा आशिष म्हात्रे (सुप्रजा)/सौ. अपुर्वा अमित पाटील (खेहल)	149
37	स्त्रीवाद: समस्या आव्हाने व उपाय दत्ताजी हुल्लप्पा मेहत्रे	152
38	स्त्रीवादाचा उदय व विकास: समाजशास्त्रीय अध्ययन डॉ. श्रीनिवाम पीलगुलवार	155
39	स्त्रीवादी चळवळ आणि घरगुती हिंसा प्रा. दर्शना अतुल भोईर	163
40	स्त्रीवादी परिप्रेक्षातून लिंगाधारित अर्थसंकल्पाचा अभ्यास प्रा. संतोष भावार्थे	167
41	स्त्रीवादी साहित्य चळवळ व स्त्रीवादी साहित्य नर्मन्ना प्रा. आर. एस. शनवार	170



## स्त्रीवादी साहित्य चळवळ व स्त्रीवादी साहित्य समीक्षा

प्रा. आर. एस. शनवार

सोनुभाऊ बसवंत कला व वाणिज्य महाविद्यालय, शहापूर, जि. ठाणे

स्त्रीवाद म्हणजे लिंगभेद झुगारून स्त्री-पुरुषसमानतेकडे वाटचाल करणारा विचारप्रवाह सामान्यतः स्त्रीवाद ही पुरुषविरोध चळवळ समजली जाते. त्यामुळे ही स्त्रियांचे ऐतिहासिक दुय्यमत्व उजेडात आणून हे शोषण संपवण्याचा प्रयत्न करते. ही एक सामाजिक, राजकीय चळवळ आहे. 'चळवळ' हा शब्द Movement या शब्दावरून आला. मराठी शब्दकोशामध्ये चळवळ' म्हणजे हालचाल, उद्योग असा अर्थ पहावयास मिळतो. 'चळवळ' या शब्दात 'बदल' अथवा 'परिवर्तन' हा अर्थ ध्वनित होतो. जी स्थिती आहे; त्यापासून वेगळे होणे, जे वास्तव आहे त्यामध्ये बदल होणे. मूळ जे काही आहे त्यामध्ये परिवर्तन होणे म्हणजे चळवळ. या बदलामध्ये व परिवर्तनामध्ये जाणीवपूर्वकतेला प्राधान्य असावे लागते "चळवळ म्हणजे मनुष्य जीवनाला त्याच्या उन्नतावस्थेकडे नेणारी एक घडपड, जीवनाला वर्ध्द्विष्णु करणारी एक संघटित आचार-विचारांची संघर्षमय प्रक्रिया होय." १ डॉ. मेथ्राम यांनी चळवळीकडे विधायक अंगाने पाहिले आहे. चळवळ म्हणजे घडपड, जी घडपड मानवी जीवनाला प्रगतीपथावर नेते, मानवाचे उत्थान करते. अशी घडपड ही संघटितपणे होणे आवश्यक असल्याचेही ते सांगतात. "लोकांत रक्तविहीन मार्गाने सर्व प्रकारचं परिवर्तन घडवून आणून त्यांना दुःखनिरोधाचा मार्ग दाखवणं म्हणजे चळवळ हे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनीच त्यांच्या विचारव्यूहातून आम्हाला शिकवला आहे. ते मूर्त स्वरूपात दिसत नसेल तर चळवळ या शब्दाला अर्थ उरत नाही." २ या व्याख्येत परिवर्तन घडवून आणण्यासाठी, दुःख निवारण्यासाठी शोधलेला मार्ग आहे. विशेषतः रक्तपात न घडविता परिवर्तन व्हावे; यास चवळीत महत्व प्राप्त होते.

स्त्रीवादी साहित्य चळवळीचा उगम स्त्रीमुक्ती चळवळीत स्त्रीवादी विचारप्रणालीतून झाला. जीवनाच्या प्रत्येक क्षेत्रात स्त्रीला स्वतंत्र स्थान मिळाले पाहिजे, यासाठी स्त्रीवादी विचारवंतानी लढा दिला. स्त्रियांच्या विकासासाठी जाणीवपूर्वक कार्य करताना पुरुषप्रधान व्यवस्थेत स्त्रीची कशी दडपणूक होते, कुचंबना होते हे पटवून देण्यासाठी स्त्रीवादी विचारवंतानी, नेत्यांनी कार्य हाती घेतले. लेखन, भाषण, सभा, बैठका, मोर्चे, धरणे, निवेदन याबरोबरच चर्चासत्रे, कार्यशाळा इ. चे आयोजनसुरू करून त्याद्वारे स्त्रियांना जागृत केले. कोणत्याही प्रकारची दडपणाही मानवी जीवनात कायमस्वरूपी टिकत नाही, याचे प्रतीक म्हणजे स्त्रीवादी चळवळ होय. स्त्रीवादी साहित्य ही स्त्रियांची वाङ्मयीन चळवळ आहे. स्त्रियांना शिक्षणाचा अधिकार मिळाला यातून त्यांना स्वतःची जाणीव झाली. आपल्यावरील बंधनांची, पारतंत्र्याची जाणीवही झाली. त्यांच्या ठिकाणचा आत्मविश्वास जागृत झाला. त्यातून त्यांनी लेखनाला सुरुवात केली. स्त्रियांचे प्रश्न तसेच स्वतःचे अनुभव साहित्यातून मांडायला सुरुवात केली. आपल्या साहित्यातून स्त्री स्वातंत्र्याचा पुरस्कार केला व पुरुषसत्ताक व्यवस्थेला नकार दिला." स्त्रीवाद ही गांधी नेतृत्व असलेली चळवळ नाही अनेक स्त्रियांनी वेगवेगळ्या पातळ्यांवर या चळवळीत भर घातलेली आहे. त्यामुळे ही चळवळ आणि त्यातून निर्माण झालेले सिद्धांत हे अनेक प्रवाही आहे" ३

१९७५ नंतर भारतातील स्त्रीवादी विचारांना सुरुवात झाली असली तरी पाश्चात्य देशात ही सुरुवात १९ व्या शतकाच्या पूर्वार्धात झालेली दिसते. राजकीय प्रक्रियेमध्ये स्थान मिळावे, मतदानाचा अधिकार मिळावा, मत स्वातंत्र्य मिळावे, शिक्षणात नोकरी-व्यवसायात स्थान मिळावे, संपत्ती मध्ये वाटा मिळावा अशा अनेक हक्कांसाठी पाश्चात्य देशातील (इंग्लंड, अमेरिका, फ्रान्स) स्त्रियांना दीर्घकाळ लढा द्यावा लागला. या हक्कासाठी प्रसंगी त्यांनी तुरुंगवासही भोगला त्यामुळे त्यांच्यातील संघटित शक्ती जागृत झाली. पुरुषप्रधान समाजव्यवस्थेमध्ये मिळणारी



Impact Factor – 8.575

ISSN – 2278-9308

# B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed  
Multidisciplinary International Research Journal

**March-2022**

ISSUE No- (CCCXL ) 340

## The Relevance of The Feminism Movement in the Twenty -First Century

**Prof. Virag.S.Gawande**

Chief Editor  
Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

**Dr. Vinod Sambhaji Sonawane**

Executive Editor  
I/C Principal

Arts, Commerce and Science College, Onde, Tal. Vikramgad, Dist. Palghar

**Dr. Chetana Yogesh Patil**  
Editor

Convener & Vice Principal, Head,  
Women Development Cell

**Dr. Basweshwar Pandagale**  
Editor

Co-Ordinator  
HOD, Department of Political Science

**Aadhar International Publication**

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

© All rights reserved with the authors & publisher



22	Liberal Feminism The Relevance of the feministic Movement in the Twenty-First Century <b>Ms. Jigna Pabari / Ms. Deepali Mehta</b>	107
23	The Women and Her Significant Role in the Biodiversity Conservation <b>Dr. Sayyed Juned A</b>	112
24	Women Empowerment And Politics <b>Dr.K.Eswara Reddy</b>	116
25	Women Empowerment: Special reference to BharatiyaMahila Bank <b>Dr. Santosh S. Budhwant</b>	121
26	Women's Political Participation in Local Self Government <b>Miss. Ujwala W. Kadam</b>	125
27	A Study of Social Relationship skill of Female Student-teachers <b>Mr. Sandeep Bajirao Bodke</b>	129
28	Feminism and Tribal Women: An Empirical Study of Todas Tribes of Nilgiris <b>Dr. S. Kamala Devi</b>	134
29	The Relevance of Liberal Feminism in India: In the light of past and the present context <b>Janhavi Gaikwad/ Aasawari Pol</b>	142
30	नारी जागृति : उत्तराखण्ड की जनजातियों के परिप्रेक्ष्य में गीता पाण्डेय उप्रेती / पूजा दरमोड़ा	147
31	स्वतंत्रता आंदोलन तथा खिलाफत आंदोलन में बी अम्मा की सक्रीय सहभागीता का चिकित्सक अभ्यास डॉ. सैय्यद मुजाहिद सैय्यद बासीत	151
32	गढ़वाल की प्रथम महिला सांसद : महारानी कमलेन्दुमति शाह रीना रांगड़ / वन्दना आर्य	155
33	स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता का एकसभीक्षात्मक अध्ययन राम मिलन कुम्हार /डॉ० अमरजीत कुमार सिंह	158
34	भारत में महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व डॉ.शाहेदा मुनाफ	165
35	बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में व्यक्त नारी जीवन (प्रतिनिधिक महिला उपन्यासकारों के विशेष सन्दर्भ में) प्रा.डी.आर.भुरे	169
36	महिला सशक्तिकरण में पंचायत राज की भूमिका (झारखण्ड राज्य का एक अध्ययन) <b>Prof.Vinay Kumar Gupta</b>	178
37	स्त्रीवाद और महिला सशक्तिकरण डॉ अल्पना वैद्य	182
38	स्वतंत्रता संग्राम में सरोजिनी नायडू की भूमिका : एक अध्ययन डॉ. विनोद संभाजी सोनवणे	185
39	हिंदी साहित्य में नारी की प्रतिमा प्रा. वर्षा मोरे - पावडे	189
40	Contribution of Women Freedom Fighters from Tamil Nadu – A Study <b>C. Ramalakshmi</b>	191



## **Women Empowerment: Special reference to Bharatiya Mahila Bank**

**Dr. Santosh S. Budhwant**

Assistant Professor in Economics Sombhau Baswant College, Shahapur

### **Abstract :-**

Indian women according to Indian culture are known as goddess who is also revered as mother & sister. This paper focuses on an empowerment to Indian women through the scheme of Bharatiya Mahila Bank. India's former Prime minister Dr. Manmohan Singh inaugurated the system on 19 November 2013 on the occasion of the 94<sup>th</sup> anniversary of former Indian Prime Minister Shrimathi Indira Gandhi. BMB will allow deposits to flow from everyone but an advance will be issued for women. Hence every women will be able to access financial services for their economic upliftment and betterment as well.

**Keywords-** Women Employment, Challenges, Objective of Scheme, Economical Development, Future Anticipation of BMB.

### **Introduction :-**

Bank plays pivotal role in Economic Development in term of mobilizing resources from one sector to another sector for structural development in the country. Therefore bank which is considered as a Economic Backbone of the Economy.

"Bharatiya Mahila Bank the country's first women bank has started in public sector since 19<sup>th</sup> November 2013 when Miss Usha Subramanyam was elected and appointed as a first president of BMB. The Government plans to provide direct financial Aid to this bank initially the bank has a board of director of consisting eight women such as Chhavi Rajawat Sarpanch of Rajasthan, Nupur Mitra (Ex-president of Dena Bank), Kalpana Saroj (CEO), Renuka Dubhash (President of Godrej Marketing) and Priya Kumar a government nominee. At present there are 28 Nationalized banks including BMB. Bharatiya Mahila Bank shall also aim to inspire people with entrepreneurial skill, plans to train women's for different vocations like toy making, driving tractor, mobile repairing, self employment etc. There is 26% women in the country who accessed banking services and 8% females who avail loan facilities. However BMB will raise lending capacity to women throughout the country for their financial betterment.

BMB owned initial capital consist of Rs.100000 Crore. Whereas the Government plans to have 25 branches of the said bank by the end of March 2014, and 500 branches by 2017. Bharatiya Mahila Bank has started its various branches in The Country at Mumbai, Aagartala (Trepura), Shilong (Meghalaya), Gangtoke (Sikkim), & Itanagar. BMB will also open some new branches in country's rural regions in future."<sup>1</sup>

### **Features of Bharatiya Mahila Bank :-**

1. The bank includes 8 members in boards which may extend upto 12.
2. Bank will offer 4.5% interest on savings.
3. The bank will also support financially for self help groups.
4. Loans will be provided primarily to women and will also lend low cost educational loans for girls.
5. Key positions of the bank like treasury head, security head will be held by women.

### **Objective of Research Paper :-**

1. To study the contribution of Bharatiya Mahila Bank towards Economic Development of Women in the country.
2. To study the scope of BMB throughout the country in case of women empowerment.
3. To analysis the problems & challenges in team of operating BMB.
4. To study a various objectives of BMB.
5. To encourage women empowerment through various scheme of BMB.

## ताम्रपाषाणकालीन महाराष्ट्रातील शेती आणि जलसिंचन व्यवस्था :

### एक अभ्यास

डॉ. गौतम गोविंद सोनवणे

सहयोगी प्राध्यापक व विभाग प्रमुख

सोनूभाऊ बसवंत कला व वाणिज्य महाविद्यालय, शहापूर जि. ठाणे

सार :-

प्रस्तुत लेखात ताम्रपाषाणकालीन महाराष्ट्रातील दख्खनच्या पठारावर आद्यशेती आणि जलसिंचन व्यवस्थेची सुरुवात कशी झाली याची माहिती घेवून शेतीतंत्र, पिके, शेतकऱ्यांच्या वसाहती, शेती केंद्रे, स्थिर मानवी जीवनाची सुरुवात, दख्खन मधील नद्या, व पाणीपुरवठ्याचा आढावा घेण्यात आला आहे.

प्रस्तावना :-

ताम्र म्हणजे तांबे आणि लिथ म्हणजे पाषाण म्हणून यांच्या एकत्रित संस्कृतीला ताम्रपाषाण संस्कृती म्हणून ओळखले जाते. भारतात अनेक राज्यात ताम्रपाषाण संस्कृतीच्या वसाहती मिळाल्या आहेत. महाराष्ट्रात प्रवरानदीकाठी असलेले जोर्वे हे ठिकाण प्रथम उजेडात आल्यामुळे या संस्कृतीला जोर्वे संस्कृती म्हणूनही ओळखतात. प्राचीन मानव जातीच्या इतिहासात ताम्रपाषाण काळात शेतीच्या उदय झाला म्हणून ताम्रपाषाणयुगाला स्थिर संस्कृतीचे युग म्हणून ओळखले जाते. अन्न मिळवण्यासाठीची मानवाची भटकी आणि शिकारी अवस्था संपून या काळात मानव अन्न उत्पादन करण्यासाठी तयार झाला. अन्न संचय ते अन्न उत्पादन अशा प्रदीर्घ कालखंडात मानवाचे जीवन अपार कष्टमय असल्याचे दिसते.

महातष्ट्रात दख्खन पठारावर तापी, गोदावरी व भीमा नद्यांच्या खोऱ्यात ताम्रयुगीन मानवाच्या असंख्य वसाहती सापडल्या आहेत. भारतात नावाश्मयुगाच्या शेवटी शेतीचा शोध लागल्याचे मानले जाते. परंतु महाराष्ट्रात ताम्रयुगात शेती आणि पाणीपुरवठा या मानवी जीवनातील अत्यंत महत्वाच्या टप्प्याला सुरुवात झाल्याचे अनेक पुराव्यावरून सिद्ध झाले आहे. ताम्रयुगात महाराष्ट्रातील लोकांनी शेतीचे विकासासंबंधीचे तंत्र आणि शेतीचे कसण्याचे आदर्श घालून देवून जलसिंचनाद्वारे प्रगत आणि संपन्न शेती व्यवसायाला चालना मिळवून दिली. म्हणून या संस्कृतीला महाराष्ट्रातील पहिली कृषी संस्कृती म्हणतात.

### संशोधनाची उद्दिष्टे :-

- 1) ताम्रपाषाण संस्कृतीतील शेतीच्या उदयाचा आढावा घेणे.
- 2) ताम्रपाषाण संस्कृतीतील शेतकऱ्यांनी विकसित केलेले शेतीचे तंत्र पिकांचा आढावा घेणे.
- 3) ताम्रयुगातील जलसिंचनाची माहिती करून घेणे.

### अभ्यासाची साधने :-

ताम्रपाषाण कालखंडातील शेती आणि जलसिंचन व्यवस्थेच्या माहितीसाठी अनेक साधनांचा आधार घ्यावा लागतो. त्यामध्ये उत्खननात मिळालेली मातीची भांडी, लाकडी नांगर, प्राण्यांची हाडे, जळालेले धान्य, तांबे धातू, दगडी नांगराचे फाळ, कुदळ, इनामगाव येथील कालवा इत्यादींचा समावेश होतो.

### 1) शेतीप्रधान संस्कृतीचा उदय :-

प्रागैतिहासिक काळापासून महाराष्ट्रराज्य हे कृषीप्रधान राज्य आहे. महाराष्ट्रातील शेती निसर्गाच्या पाण्यावर अवलंबून राहिली असल्याचे दिसते. ताम्रपाषाण संस्कृती ही प्रागैतिहासिक कालीन महाराष्ट्रातील पहिली शेतीप्रधान संस्कृती असल्याचे अनेक पुराव्यांवरून सिद्ध झाल्याचे दिसते. प्राचीन मानवाच्या खडतर, कष्टमय आणि ऐतिहासिक वाटचालीत ताम्रयुगीन संस्कृतीला अनन्य साधारण महत्व आहे कारण या काळातील मानवाने महाराष्ट्राच्या इतिहासात प्रथमच शेतीची मुहूर्तमेढ रोवली. या काळातील मानवाने शेती करून अन्न मिळवण्याचे तंत्र हस्तगत केल्याचे दिसते. या शेतीक्रांतीमुळेच मानवाची भटकी आणि शिकारी अवस्था संपूर्णतः आल्याचे दिसते. या काळातील मानवाने शेती करणाऱ्याचे कौशल्य हस्तगत करून मानवाच्या सुखकर जीवनाचा मार्ग मोकळा केल्याचे दिसते. बोरकर र.रा. (2004)

ताम्रयुगीन काळापासून महाराष्ट्रातील मानवाचे भटके जीवन संपून माणूस स्थिर जीवनाकडे वाटचाल करू लागला. ताम्रपाषाणकालीन मानवाने नद्याकाठी वस्ती करून अन्नधान्याचे पीक काढायला सुरुवात केली असल्यामुळे मानवाची रानटी आणि भटकी अवस्था नष्ट झाली आणि माणूस स्थिरस्थावर होवून त्याने शेती व्यवसायाला सुरुवात केल्याचे दिसते. संशोधक(1988)

### 2) महाराष्ट्रात शेतीची सुरुवात :-

इ. स. पु. 2000 च्या सुमारास सर्व प्रथम ताम्रपाषाणयुगीन लोकांनीच दख्खन पठारावर शेती व्यवसायाची सुरुवात केल्याचे अनेक पुराव्यांवरून स्पष्ट झाल्याचे दिसते. दख्खन पठार हे भौगोलिक दृष्ट्या शेतीसाठी अनुकूल होते. हा भाग सुपीक काळ्या मातीने व्यापलेला

असल्यामुळे पावसाचे पाणी जमिनीत मुरत असे. प्रचंड पर्जन्य आणि जमिनीचा चिकटपणा, टणकपणा या गुणधर्मांमुळे ताम्रयुगीन लोकांनी या भागात प्रथमच शेती कसण्यास सुरुवात केली असावी.दक्षिण महाराष्ट्राचा भाग वगळता महाराष्ट्रातील इतर भागात मात्र ताम्रयुगीन शेतीबद्दल फारसी माहिती मिळत नसल्याचे दिसते.

### 3) ताम्रपाषाण युगीन शेतकरी :-

महाराष्ट्रातील पहिला शेतकरी म्हणून ताम्रयुगीन शेतकऱ्याकडे पहिले जाते.ताम्रयुगात महाराष्ट्रात इनामगाव, जोर्वे,नेवासे,दायमाबाद,सोनगाव,नासिक या ठिकाणी शेतकऱ्यांच्या असंख्य वसाहती मिळाल्या आहेत.या काळात प्रथमच शेतकऱ्याला शेती करण्याचे तंत्र अवगत झाल्यामुळे शेती विकासाच्या दृष्टीने मानवाने पावले टाकायला सुरुवात केली परिणामी स्थिर शेतीला सुरुवात झाली. सांकलिया हसमुख,(1976)

### 4) ताम्रपाषाणकालीन शेतकऱ्यांच्या वसाहती :-

महाराष्ट्रात कोकणचा भाग वगळता इतर सर्वत्र ताम्रपाषाण संस्कृतीच्या वसाहती मिळाल्या आहेत. या संस्कृतीतील अनेक खानाखुणा नदीतीरावर मिळाल्या आहेत. कृष्णा,भीमा, गोदावरी,तापी,गिरणा,प्रवरा,घोडं,नीरा या नद्यांच्या खोऱ्यात तसेच विदर्भातील चंद्रपुर आणि अमरावती या ठिकाणी ताम्रयुगीन वसाहतींचे अवशेष मिळाले आहेत.

5) घरे :- उत्खननात मिळालेल्या वसाहतींच्या अवशेषावरून ताम्रकालीन शेतकऱ्यांची घरे ही कुडाची असून त्याला मातीची गिलावा दिला जात असावा. ताम्रपाषाणसंस्कृतीत मिळालेली घरे झोपडी वजा असून त्यांचा आकार गोल किंवा आयताकार असल्याचे दिसते.ही घरे बाहेरून गवताने शेजारलेली असत आणि आतून काळ्या मातीचा गिलावा करत असत.

### 6) इनामगाव येथील कालवा :-

इनामगाव हे ठिकाण पुणे जिल्ह्यातील महत्वपूर्ण ताम्रपाषाणकालीन उत्खनन स्थळ समजले जाते. या ठिकाणी ताम्रयुगीन संस्कृतीचे अनेक अवशेष मिळाले आहेत. या ठिकाणी घोडं नदीच्या काठावर एक वसाहत मिळाली आहे. या वसाहतीपासून 300 मीटर अंतरावर एक कालवा मिळाला आहे. हा कालवा म्हणजे पाणी साठवण्यासाठीचा भारतातील सर्वात प्राचीन पुरावा मनाला जातो. या कालव्यातून शेतीला पाणी पुरवठा केला जात असावा. जोर्वे संस्कृतीच्या



काळात हा कालवा खोदला असल्याचे दिसते. या कालव्याच्या बाजूला एक दगडमातीने बांधलेला बंधारा मिळाला आहे. या शिवाय अनेक लहान सहान नद्या मिळाल्या आहेत. ज्यातून शेतीला पाणीपुरवठा करून भरघोष उत्पन्न घेतले जात असावे.

### 7) दक्षिणेतील नद्यांची खोरे :-

महाराष्ट्रराज्य नद्या खोऱ्यांनी समृद्ध बनलेले आहे. महाराष्ट्राच्या आर्थिक जडण घडणीत नद्यांचे मोठे योगदान राहिले आहे. नद्यांचे क्षेत्रफळ आणि लांबी अधिक असल्यामुळे नद्यातील वाहून आलेल्या गाळामुळे जमिनीची सुपीकता वाढत गेली. ताम्रयुगीन महाराष्ट्रात प्रथम शेती आणि जलसिंनाची सुरुवात होण्याचे मुख्य कारण म्हणजे दख्खन पठारामधील नद्यांचे खोरे होय. ताम्रयुगीन महाराष्ट्रात गोदावरी,तापी,आणि भीमा या तीन महत्वाच्या नद्याखोऱ्यांची अनुकूलता लाभली होती.

**गोदावरी :-** दक्षिण भारतातील सर्वात मोठी आणि महत्वाची नदी म्हणून गोदावरीची ओळखली जाते. या नदीचे जलक्षेत्र प्रचंड मोठे आहे. जल क्षेत्राच्या विस्तराच्या बाबतीत गंगा नदीच्या खालोखाल गोदावरीचा नंबर लागतो. अरबी समुद्रापासून 80. की.मी. अंतरावर नाशिक जिल्ह्यात त्र्यंबकेश्वर पासून तिचा उगम सुरू होतो. तिचा प्रवाह नाशिक अहमदनगर औरंगाबाद जालना बीड परभणी नांदेड तेलंगणा आणि गडचिरोली असा आहे.

**कृष्णा नदी :-** दक्षिण भारतातली एक महत्वाची नदी म्हणून कृष्णा नदी ओळखली जाते. महाबळेश्वर जवळ तिचा उगम होऊन ही नदी कर्नाटक राज्यातून आंध्रप्रदेशात वाहत वाहत ती गुंटूर जिल्ह्यात बंगालच्या उपसागरास मिळते. डाव्या उजव्या तीरावरून कोयना,वारणा व पंचगंगा तुंगभद्रा यासारख्या मोठ्या नद्या कृष्णेला मिळतात.

**तापी नदी :-** तापी नदीच्या मुबलक पाणी पुरवट्यामुळे तेथील जमीन अतिशय सुपीक बनली होती.

**भीमा नदी :-** भीमा नदी महत्वाची मनाली जाते तिचा उगम पुणे जिल्ह्यातील भीमाशंकर पासून सुरू होतो. या नदीचा प्रवाह पुणे सोलापूर अहमदनगर बीड उस्मानाबाद सातारा सांगली असा आहे. भिमेच्या खोऱ्यामुळे शेतीला प्रचंड पाणीपुरवठा होऊन शेतीचा विकास झाल्याचे दिसते.

### 8) स्थिर मानवी जीवनाला प्रारंभ :-

स्थिर संस्कृती हे ताम्रपाषाणयुगाचे खास वैशिष्ट्य मानले जाते. शेतीवर आधारित स्थिर मानवी जीवनाची देणगी ताम्रयुगीन लोकांनीच महाराष्ट्राला दिल्याचे दिसते. अश्मयुगापासून नवाश्मयुगापर्यंत सुरू असलेली मानवाची भटकी आणि रानटी अवस्था संपून ताम्रयुगात मानसाच्या

स्थिर जीवनाला सुरुवात झाल्याचे दिसते. याच काळात कृषि क्षेत्रात क्रांतिकारक बदल झाल्याचे दिसते. या बदलाचे मुख्य कारण अनुकूल हवामान, काळी जमीन, मुबलक पाण्यामुळे शेतीचे तंत्र मानवाला अवगत झाले. परिणामी ताम्रयुगात माणूस स्थिर जीवनाकडे वाटचाल करू लागला. गाठाळ एस. (2014)

### 9) शेती केंद्रे :-

ताम्रपाषाण काळात महाराष्ट्राच्या दक्षिणेकडील भागात शेती कसण्यास सुरुवात झाल्याचे मानतात. याचा भागात प्रसिद्ध शेतीकेंद्रे उदयाला आल्याचे दिसते. अहमदनगर जिल्ह्यातील दायमाबाद व नेवासे आणि पुणे जिल्ह्यातील इनामगाव ही तीन शेती केंद्रे असल्याचे मानले जाते याच ठिकाणी शेतीक्षेत्रा संबंधीचे अवशेष मिळाले आहेत.

### 10) जमिनीचा प्रकार :-

दख्खन पठारावरील काळ्या जमिनीच्या उपलब्दतेमुळे ताम्रयुगात शेतीला पूरक परिस्थिती निर्माण झाली. पावसाचे साचलेले पाणी, तलावात साचलेले पाणी, पाणथळ, आणि बागा, घनदाट झाडे झुडपे, कुरणे, गवत अशा वनस्पतीमुळे जमिनीला काळेपणा येऊन जमिनीची सुपीकता वाढली. काळ्या जमिनीला दख्खन मधील नद्यांच्या खोऱ्यांचा मुबलक पाणी पुरवठा झाल्यामुळे शेतीच्या विकासाला चालना मिळत गेल्याचे निदर्शनास येते. याचा काळात मानवाला शेतीतंत्राची दिशा मिळामुळेच त्याने शेती हा जीवनाचा मुख्य आधार आणि मार्ग बनला असावा.

### 11) शेतीतील पिके :-

ताम्र पाषाणकालीन महाराष्ट्रात दायमाबाद, नेवासे आणि इनामगाव हे शेतीचे प्रमुख केंद्रे होती. शेती कसण्याचे कसब ताम्रकालीन मानवाला अवगत असल्याचे दिसते. या काळातील शेतकरी विविध पिके घेत असल्याचे नगर जिल्ह्यातील इनामगाव व दायमाबाद या ठिकाणी जळालेल्या धान्याचे अवशेषावरून निदर्शनास येते. याकाळातील शेतकरी गहू, ज्वारी, बाजरी, तांदूळ, कापूस, मूग, मसूर हुलगे, वाल, उडीद, हरभरा, कुळीथ, सातू, पावठा इत्यादी पिके मोठ्या प्रमाणावर घेत असल्याचे दिसते. धुळे जिल्ह्यात कवठेगाव या ठिकाणी बाजरीचे अवशेष सापडले आहेत. पवार, जयसिंग (1994)

### 12) जलसिंचनाचा उदय :-

ताम्रयुगीन संस्कृतीनेच सर्व प्रथम जलसिंचन व्यवस्थेला जन्म देवून भारतीय माणसाला सोप्या आणि सुलभ पद्धतीने शेती उत्पन्नाचा मार्ग मिळवून दिल्याचे पुराव्यावरून सिद्ध

झाल्याचे दिसते. या काळापासूनच पावसाचे पाणी मातीच्या तळ्यात साठवून नंतर ते कालव्याद्वारे शेतीला पुरवले जात असे. या काळापासूनच दूआबात शेती करण्यात येत असल्याचे समजते.

ताम्रपाषाण युगात दख्खनच्या पाठरातून प्रथम शेतीव्यावसायाला सुरुवात झाल्याचे दिसते.दख्खनच्या पठारात पाऊस मोठमोठ्या नद्या असल्यामुळे शेतीला पाणीपुरवठा करण्यासाठी पाटबंधारे आणि कालव्यांच्या सोय केली असावी. या संबंधीचा पुरावा पुण्याजवळील इनामगाव येथे मिळाला असून तो सर्वात प्राचीन आहे. इनामगाव या ठिकाणी घोडनदीवर बंधारा बांधल्याचे उल्लेख मिळाले आहेत. याशिवाय इतर लहान लहान नद्यांना बांध घालून शेतीसाठी पाणी पुरवठ्याचीकेला जात असल्याचे आढळते. फडके वासंती (2007)

### निष्कर्ष :-

इ.स.पू. 2000 च्या दरम्यान महाराष्ट्रातील दख्खन पठारावर मानवाच्या वाढत्या गरजा आणि अपुऱ्या नैसर्गिक साधन संपत्तीमुळे शेतीला सुरुवात झाल्याचे निदर्शनास येते. शेती आणि जलसिंचनाच्या उदयामुळे ताम्रयुगात स्थिरजीवनाला सुरुवात होवून महाराष्ट्रात शेती संस्कृतीला आणि जलसिंचनाला प्रारंभ झाल्याचे दिसते.

### संदर्भ ग्रंथ :-

1. बोरकर र.रा. (2004),पुरातत्वीय शोध, कल्याण शिक्षण संस्था , नागपूर,पृष्ठ 19.
2. संशोधक ,धुळे , डिसेंबर 1988,वर्ष 56,अंक 4 पृ. 24
3. सांकलिया हसमुख,(1976) महाराष्ट्रातील पुरातत्व, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई,पृ. 28.
4. गाठाळ एस. ( 2014) भारताचा इतिहास व संस्कृती ,कैलाश पब्लिकेशन औरंगाबाद. पृ. 46
5. पवार,जयसिंग (1994)भारत वर्षाचा प्राचीन आणि मध्ययुगीन इतिहास,मंजुश्री प्रकाशन, कोल्हापूर,पृ. 12.
6. फडके वासंती (2007) प्राचीन भारत ,के,सागर पब्लिकेशन, पुणे. पृ. 45.